मासिक

मानव मन्दिर

संरक्षक :	सम्पादक
परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज	सेठ दुर्गादास जी

१	मार्च १९७५	संख्या १२

सम्पादकीय

शान्ति

शान्ति की अनमोल दात प्रत्येक मानव के भाग्य में होनी असम्भव है । यह दुर्लभ पदार्थ हाथ आना कठिन काम है, और न हर एक व्यक्ति इसका इच्छुक ही है । बल्कि यों कहना चाहिए कि अधिक संख्या ऐसे व्यक्तियों की है । जिनको यह पता ही नहीं है कि 'शान्ति' क्या वस्तु है यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में अनजान रूप से इसकी खोज में समस्त जीवन लगा रहता है । बालक अपने खेल में शान्ति का ही इच्छुक है । विद्यार्थी विद्या प्राप्त करने में तत्पर है किन्तु गुप्त रूप से विद्या पढ़ने से शान्ति चाहता है । गृहस्थी भोग विलास में शान्ति ही ढूण्ढता है । मजदूर, क्लर्क, कारखाने वाले, दुकानदार, आफीसर मन्त्री, पून्जीपती, मिस्त्री, इन्जीनियर, प्रोफेसर और वैज्ञानिक अथवा हर एक व्यक्ति इस संसार में

अज्ञात रूप से शान्ति पाने के लिए काम कर रहा है किन्तु यह अमूल्य वस्तु किसी ने न पाई बल्कि इसको पाने के लिए बार २ इस संसार में जन्म लेता है ।

साधू, हंस, परम हंस, सन्त और परम सन्त सब इसके इच्छुक हैं, पर किसको शान्ति मिली ? यह प्रश्न है । प्रत्येक महापुरुष अपने मन की दशा को अच्छी तरह जानता है । और उसे पता है कि वह शान्ति से कितनी दूर है ।

प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय इसको प्राप्त करने के लिए संकेत करता है । मुसलमान सलामालेकम और वालेकम सलाम कह कर चाहता है कि आप सलामत रहे । सलामत रहना ही शान्ति चाहना है । हिन्दू धर्म को देखो । हर वेद मन्त्र के पश्चात ॐ शान्तिः, शान्तिः शान्तिः की पुकार की जाती है । कितनी प्रबल इच्छा है । सिख कहता है सत सिरी अकाल अर्थात् अकाल सत है । अर्थात् जीवन का अन्तिम लक्ष्य शान्ती है ।

फिर इसको प्राप्त करने की क्या विधि है ?

यह भेद या विधि किसी महापुरुष और परम सन्त के सतसंग से मिल सकती है। हवन और सन्ध्या शान्ती के लिए किए जाते हैं। मुसलमानों की नमाज़ शान्तिके लिए, सिक्खों का पाठ शान्ती के लिए, ईसा-इयों का प्रचार शान्ति के लिए, तीर्थ, ब्रत, धर्म और परोपकार सब शान्ति के लिए, प्रणायाम शान्ति के लिए, सुरत शब्द योग, शब्द अभ्यास, शब्द का सुनना और प्रकाश को देखना सब शान्ति के लिए, यह सब केवल साधन मात्र हैं। लक्ष्य तो केवल शान्ति है। इस प्रकार के सब साधन शान्ति को पाने के लिए किए जाते हैं।

जब तक जीवन की खींचातानी है, यह वस्तु प्राप्त होनी कठिन है। जीवन की खींचातानी समाप्त होने के पश्चात शान्ति मार्ग का ज्ञान हो सकता है। मान प्रतिष्ठा की इच्छा है, धन संग्रह किया जा रहा है और काम में फंसा हुआ है। जब तक व्यक्ति में कोई वासना वर्तमान है, यह वस्तु मिलनी कठिन है। जब तक व्यक्ति अपने मन में फंसा हुआ है वह वासना रहित नहीं हो सकता क्योंकि मन का काम सदा सोचना, विचार करना और गतिशील रहना

है जब व्यक्ति मन को छोड़कर अर्थात् वासना रहित होकर आध्यात्मिक अवस्था में चला जाता है, उस दशा में शान्ति की झलक उस पर पड़ती है।

भाग्यशाली वह सज्जन हैं जो इस शान्ति का आनन्द लेते हैं। जीवन रखते हुए संसार से अनासक्त रहते हैं। प्रत्येक काम उनका मौज आधीन होता है। शरणागतम कहकर मन को सम्हाल लेते हैं। मैं ऐसे महापुरुषों के चरणों में श्रद्धा से नमस्कार करता हूं और चाहता हूं कि ऐ दाता। मुझ पर दया हो। मैं भी शान्ति का अधिकारी बनूं। अब देर न कीजिए।

"समदर्शी सतगुरु किया, भर्म भया सब दूर।
हुआ उजारा शान्ति का, उगिया निर्मल सूर।"

ले. श्री दुर्गादास,
चण्डीगढ़

दूसरा भाग

सत्संग हुजूर परम सन्त परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

तिथि २७ दिसम्बर सन १९७४

असत न होय सत्त कहूं कैसे। देखा अनदेखा दोऊ तैसे।
अपनी आंखी मैं नित देखूं। बिन देखे का भेद न लेखूं।
आंख खुली वह दृष्टि में आया। दृष्टि खुली वह गया गंवाया।
ऐसी बात कहै को आय। कोइ क्यों उसको पतियाय।
मैं जानूं रह २ अनजान। अनजानी कहूं कैसे जान।

दोहा— होने को तो है सही, अनहोना नहीं सोय।
है नाहीं के बीच में, कैसे समझे सोय।

राधास्वामी :—

यह वाणी आपने भी और मैंने भी सुनी बचपन से मालिक की या दूसरे शब्दों में मुझे अपनी

ही तलाश थी या यह कह लो कि मुझे समझ नहीं थी । इस तलाश के अन्तर्गत मौज मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणकमलों में ले गई। सनातन धर्म के संस्कारों के कारण मैंने उनको मालिक मानकर उनसे प्रेम किया, उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी । मैं जितना अधिक उनसे प्रेम करता था उतना ही वह मुझे कहा करते थे कि फकीर ! तू अभी काल और माया मे है, मुझे समझ नहीं आती थी और मैं उनको तंग किया करता था कि महाराज ! मुझे मालिक के दर्शन करवा दें । उन्होंने यह मुझे सत्संग का काम या नाम दान देने का काम दिया और कहा कि मेरी आज्ञा मानो तुमको मालिक मिल जाएगा । क्योंकि मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चाई से चलूंगा । और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वो संसार को बता जाऊंगा यह मेरा अपना ही कर्म भोग है, किसी पर कोई एहसान नहीं है आज यह शब्द निकला है ।

"असत न होय सत कहूं कैसे, देखा अनदेखा दोऊ तैसे ।"

जो व्यक्ति इस वाणी को पढ़ेगा वो क्या

समझेगा ? मैं क्या समझता हूं ? मेरा अनुभूत्र मुझे कहाँ ले आया ? यहां मुझे किसने पहुंचाया ? ऐ सत्संगियों ! आपका भला हो, आपने मुझे यहाँ पहुंचाया । आप लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप आपके अन्तर प्रकट होकर आपके अनेक प्रकार के काम कर जाता है और मैं नहीं होता तो मैं सोचने के लिए विवश हो गया कि मैं तो जाता नहीं यह कौन है जो इनके अन्तर मेरा रूप धारण करके जाता है और उनके काम करता है ? समझ आ गई कि यह इनके मन का खेल है और यह सब माया है। निश्चय हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रंग, रूप, भाव और विचार पैदा होते हैं यह भी वास्तव में हैं नहीं बल्कि माया है। इसलिए आगे जाने के लिए विवश हो गया। आगे हैं प्रकाश और शब्द । अब प्रकाश और शब्द में जाता हूं और वहां उस चीज को ढूण्ढता रहता हूं जो शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है और प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है लेकिन उसका पता नहीं चलता । इस अवस्था को तुम सत भी कह सकते हो और असत भी कह सकते हो लेकिन वो असत नहीं है। वो कुछ

है जरूर तो फिर मैं उसको क्या कहुं कि वोहै या नहीं है---वो है भी और नहीं भी।

यह एक ऐसी समस्या है कि जिसने इसको हल किया और वह स्वयं हल हो गया। मैं उसको जानता हूं लेकिन न जानने के बराबर। वो मेरी ही तो जात है और वो नित्य और अनन्त है मगर वह न असत है और न ही उसको सत कह सकते हैं---

अपनी आंखी मैं नित देखूं। बिन देखे का भेद न लेखूं।

मैं जब अन्तर जाता हूं तो उस नित्य और अनन्त वस्तु को देखने जाता हूं। सारा संसार ही उसको ढूण्ढता है जहां २ कोई पहुंचा उसने उसी अवस्था को मालिक कह दिया, असली मालिक तो सबका आधार और सबका साक्षी है लेकिन वो होता हुआ भी नहीं है, क्योंकि उसका कोई रंग रूप नहीं है। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊगा, अब सोचता हूं इस अनुभव के कहने से क्या लाभ है मगर बिना कहे रहा नहीं जाता—

सब कुछ है और कुछ नहीं, कहा सुना नहीं जाय।
कथन सुनन विन जीब से, चुप भी रहा न जाय।

जब तक जीवन है व्यक्ति उसमें खेलता है।

अगर दूसरो को न भी कहोगे तो भी अन्तर में तो सोचते रहोगे और अनुभव करते रहोगे। थोड़े दिन हुए फरोजपुर से मदन सिंह नामी व्यक्ति ने लिखा कि यह "हौं मैं" कैसे जाएगी "हौं मैं" क्या है ? अपने होने का जो भान है उसका नाम है "मैं" और जब तक उसकी चेतनता है तब तक "मैं" नहीं जाएगी। भगत, योगी, कर्मी, धर्मी, दुनिया का बाप, बेटा, भाई अफसर और माता पिता सभी "हौ और मैं" है "हौ मैं तो सब मे है और सब जगह है, यह तब जाएगी जब अपने रूप का ज्ञान हो जाएगा। चाहे सारा जीवन शब्द सुनते रहो, प्रकाश देखते रहो, अभ्यास करते रहो, जब तक देखते हो सुनते हो और सोचते हो तुम्हारी "मैं" कैसे गई ? जब तक अनुभव नहीं होता "मैं" नहीं जाती। अब मेरी "मैं" चली गई। कैसे गई ? आप लोगों के अनुभवों से कि 'मैं' कभी तुम्हारे अन्तर नहीं जाता इस ज्ञानसे मेरी "मैं" गई। जब अन्तर जाता हूं और जो वस्तु शब्द को सुनती और प्रकाश को देखती है उसको ढूंढता रहता हूं। जब अनुभव हो जाता है तो फिर क्या हो जाता है ? गूंगे का गुड़। ब्यान से बाहिर है। वहां जाकर

"मैं" समाप्त होती है। लेकिन जब फिर शरीर में आएगा तो भक्ति योग और साधन आदि करेगा प्रकाश को भी देखेगा और शब्द को भी सुनेगा तो फिर "मैं" आ जाएगी लेकिन पहली "मैं" में और इस "मैं" में क्या अन्तर है ? पहली "मैं" में दुख सुख आनन्द और उदाशी व्याप्ती है और अनुभव होने के बाद जो "मैं" होती है उसमें दुख सुख आनन्द और उदाशी नहीं व्याप्ती है। यह ज्ञान का तत्व है और यहीं सार है, वो आदमी दुनिया का कारोबार भी करता है लेकिन उसमें "मैं" नहीं होती।

बिना चेत चेतन की खानी. अमन समन नहीं मन अनुमानी
करता धरता सबका भाई, करता धरता सो ना रहाई।

फिर यह अवस्था आ जाती है। इस अनुभव के बाद जब तक शरीर है वो सब कुछ करता है मगर करता हुआ भी नहीं करता वो कर्तापने के भाव में फंसता नहीं है। यह है असली मतलब। जैसे मैंने यह मन्दिर बनाया है लेकिन यह मेरे स्वप्न में कभी नहीं आया। क्यों ? मुझे यह अनुभव हो चुका है कि मैं कुछ नहीं करता। इस अवस्था का नाम जीवन मुक्त अवस्था या विदेह गति

है। सब धर्मों का अन्तिम लक्ष्य यही है लेकिन ढंग अलग २ हैं। यह अवस्था साधन अभ्यास और सत्संग के बिना नहीं मिलती। हजूर दाता दयाल जी महाराज मुझे बहुत ही समझाया करते थे लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आती थी इसलिए उन्होंने मुझे सार को समझने के लिए यह काम दिया था, मुझे धन, मान और इज्जत की जरूरत नहीं थी। मैं तो मालिक को मिलना चाहता था और अपने घर वापिस जाना चाहता था, इस काम से मुझे समझ आ गई, इस समय जो मेरी अवस्था है वो मैंने ब्यान कर दी है। मुझे गुरु बनने की लालसा नहीं अगर गुरु या भक्त बनूंगा तो मुझ में "मैं" आ जाएगी। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे एक शब्द में लिखा था—

खेल खिलाऊं सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊं।
काल हड़ोले से तू वाचे विधि विचित्र समझाऊं।
कर सत्संग बिवेक से, गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधु बन कर साध ले युक्ति, जा झूले पारी।
नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत्संगत में आया।
तेरा दाव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया।

वो माया क्या है ? मन के चक्कर में आकर

प्रकाश शब्द या किसी और वस्तु को सत्त मानना यही "मैं है । अब आप लोगों की और हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया से मेरे सब भ्रम चले गए--

आंख खुली तो दृष्टि में आया, दृष्टि खुली वह गया गंवाया

आंख खुली अर्थात् अन्तर में यह समझ आ गई कि प्रकाश को कौन देखता है और शब्द को कौन सुनता है इस अनुभव के होने से पहले बाहिर में मैं जो कुछ देखता था उसको सत्त मानता । वो इस अनुभव से समाप्त हो गया—

ऐसी बात कहें जो आय, कोई क्यों उसको पतियाय ।

कौन समझेगा इन गूढ़ बातों को ? जो सार वस्तु को जानना चाहते हैं उनको समझाने और विश्वास दिलाने के लिए मैंने यह वास्तविकता वर्णन की है और इस भेद को खोला है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता । जब तक यह ज्ञान नहीं होता कि अन्तर जो कुछ नजर आता है यह माया है कोई व्यक्ति आगे नहीं जा सकता । पिछले समय के संतों ने किसी अधिकारी को ही यह भेद बतलाया और जो कुछ उन्होंने किया वो ठीक ही किया क्योंकि

जीव उनके अधिकारी नहीं थे। मैंने भेद क्यों खोला ? मानव जाति धर्म के नाम पर बंट गई। धर्म के टेकी लोग पक्षपाती हो गए और एक दूसरे का सिर काटने लग गए और धर्म के नाम पर झगड़े शुरू हो गए। इन झगड़ों का कारण यह है कि इनको असली मालिक का ज्ञान नहीं है। मेरे जिम्मे कर्तव्य है—

तेरा रूप है अद्‌भुत, अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही।

इसलिए मैंने परम दयाल बनकर इस भेद को खोल दिया है। अगर यह बात लोगों की समझ में आ जाए तो उनको वास्तविकता का पता लग जाए और धार्मिक पक्षपात दूर हो जाए।

मैं जानूं रह रह अनजान। अनजानी कहूं कैसे जान।

में जानता हूं मगर अनजान बन कर रहता हूं।

होने को तो है सही अनहोना नही सोय
है नांही के बीच में कैसे समझे कोय।

होने को तो वो है अर्थात् मेरे अन्तर में जो वस्तु प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वो कुछ है तो जरूर मगर उसका कोई रूप नहीं, तुम करके देखो। मगर वहां तक जाना बड़ा

कठिन है क्योंकि मन में जो सांसारिक वासनाएं हैं वो आगे जाने नहीं देती। अगर आदमी इन इच्छाओं को छोड़ दे तो वह वहां तक पहुंच सकता है। इसलिए साधन की आवश्यकता है और यह पांच नाम इसीलिए दिए जाते हैं कि सुमिरन ध्यान करते रहो, और जीवन खुशी से गुजारो और फिर समय आने पर तुम्हारी इच्छा के अनुसार प्रकृति आगे जाने का प्रबन्ध करेगी। पांच नाम सांसारिक जीवन को सुखदायी बनाने के लिए है, असली वस्तु है निज नाम।

बिन कर कर्म करे व्यवहारा,
बिन पग चलै सौ कोस हजारा।
बिना नैन का दृष्टा भाई,
नाक बिना सूंघे सब आई।
बिन जिभ्या बानी वहु गावे,
बिन जिभ्या स्वाद रस खावे।
बिना कान श्रोता सज्ञानी,
बिना मान के मान अभिमानी।
बिना देह के देहाधारी,
बिन अकार के सोई साकारी।

बिना रूप का रूप है, बिन अकार साकार।
निराधार आधार जग सब विधि किया विचार॥

वो वस्तु जो हमारे अन्तर प्रकाश देखती है और शब्द को सुनती है उसका ना कोई रंग है न कोई रूप है, वो ही शरीर में है, वो ही मन में है, वो ही प्रकाश में है और वो ही शब्द में है। उसकी कोई देह नहीं है मगर वो देह के न होते हुए भी सब कुछ है और सब कुछ करती है।

दाता ! आपका धन्यवाद आपने दया की मैं मालिक को मिलना चाहता था। मैं सच्चाई की खोज करना चाहता था इस हकीकत का ज्ञान देने के लिए मुझे आपने यह काम दिया था, मुझे गुरु बन कर लोगों को ठगने के लिए यह काम नहीं दिया था इसलिए मेंने पूरी सच्चाई से जीवन बिताया है, जो स्वयं अनुभव किया वह कहा और किसी की की नकल नहीं की, अब यह चाहता हूं कि जब तक शरीर में हूं मेरे सब दृश्य समाप्त हो जाएं।

सुरत हुई अति कर मगनानी,
पुरुष अनामी जाए समानी।

न मैं, न तू, न गुरु न चेला, न कर्म न धर्म, न जप न तप, सब समाप्त हो जाए।

मुक्त न वह न शुद्ध अशुद्ध,
ज्ञानी वढ़ वकता बढ़ बुद्ध,
निरबुद्धि नही बुद्धिमान,
किस विध तिसका करूं बखान।

उसका न कोई रूप है न रेखा, वो है सुरत, वो ही सुरत सब कुछ करती है यह तो उन्होंने बतला दिया कि सुरत सब कुछ करती है मगर यह नहीं बताया कि तुम इस अवस्था को कैसे प्राप्त कर सकते हो।

मन के सारे खेलों को छोड़ कर प्रकाश और शब्द में रहने से भी तुमको वह अवस्था नहीं मिल सकती क्योंकि प्रकाश और शब्द में अपनी हस्ती का "है पना" मौजूद रहता है जब तक व्यक्ति उस वस्तु की तरफ नहीं जाता जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है उसको उस अवस्था का जिसका यहां वर्णन ऊपर आया है अनुभव नहीं हो सकता और उसको अनुभव भी तब होगा जब सच्ची जिज्ञासा होगी वरना नहीं। इसलिए स्वामी जी महाराज ने कहा है—

सूरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा,
तू तो पड़ा भ्रम के कूपा

जो व्यक्ति सिर्फ शब्द को ही पकड़ते हैं और शब्द को ही मुख्य मानते हैं वो भ्रम के कूप में हैं और जो शब्द को ही ध्येय समझते हैं वो भी भ्रम में हैं और परमार्थ से अनजान हैं। क्योंकि शब्द को सुनने वाली तो कोई और चीज है और वह शब्द से अलग है। इस अवस्था को किसी ने किसी तरह से व्यान किया और किसी ने इसको वर्णन करने के लिए कोई और शब्द प्रयोग किए लेकिन स्पष्ट वर्णन नहीं किया, अन्तिम अवस्था का स्पष्ट वर्णन हो ही नहीं सकता। इस अवस्था के बाद चुप आ जाती है। एक अवस्था आ जाती है :—

कर्ता धर्ता सबका भाई, कर्ता धर्ता सो न रहाई।
बिना सीस धारे ही धारा, नहीं असार वो सबका सारा।

वो वस्तु शरीर में आकर सारे खेल की साक्षी बन जाती है मगर अपने सिर पर कोई बोझ नहीं लेती। यह जीवन मुक्त अवस्था है। यह करनी का बिषय है। अमल में मैं भी गिर जाता हूं, गो मैं इस अवस्था को जानता हूं मगर मेरा अभी वो ज्ञान शत प्रतिशत परिपक्व नहीं हुआ। इसके लिए साधन

की आवश्यकता है, कहने की आवश्यकता नहीं रहने की आवश्यकता है।

मैं जो यह कहता हूं कि मैं गिर जाता हूं, क्यों कहता हूं ? थोड़े समय की बात है कि बम्बई से एक सज्जन रसूल आजाद आया और उसने मन्दिर में कुछ दान दिया, उस समय मेरे मन में दो सैकिण्ड के लिए खुशी आई वो जो खुशी आई वह मेरा गिरना था, फिर अपने आप को संभाला और उसको सार भेद बताया कि रसूल आजाद ! तुमक जो कुछ मिला था तेरे काम में जो उन्नति हुई या तेरा कारोबार अच्छा चल गया था तुमको अच्छी आय होती है, यह सब तेरे अपने ही कर्म और तेरे अपने ही विश्वास का फल तुमको मिला है। मैंने न कुछ किया और न कर सकता हूं, सिवाय शुभ भावना के मेरे पास कुछ नहीं है, और अगर मेरे पास कुछ है तो उसका मुझे ज्ञान नहीं है।

सन्त को हर्ष और शोक से रहित होना चाहिए मगर यह केवल उसके अपने लिए है, संसार के व्यवहार में जो व्यक्ति दूसरे को दुःखी देख कर उसके दुःख का अनुभव करता है या उसको उपाय

बताता है या उसकी सहायता करता है वह सच्चा फकीर है और दूसरे की खुशी देख कर जो खुश होता है वह भी सच्चा फकीर है। संत वह है जो स्वार्थ के लिए न हर्ष अनुभव करे न शोक। मुझमें अभी तक चार पाँच प्रतिशत कमी है। इसलिए बहुत बार गिर जाता हूं मगर कब गिरता हूं ? जब गुरु या गुरु का ज्ञान याद नहीं रहता।

अवगति की गति कठिन है, निरालम्ब निरदेव।
व्यापक सुर अरु असुर में अद्भुत अचरज देव।-

वो वस्तु जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वो मालिक का तत्व है। हर जगह और प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है मगर जब तक व्यक्ति की वह अवस्था परिपक्व न हो जाए वह गिरता रहता है और जीवन मुक्त अवस्था में नहीं आ सकता। ज्ञान की दृष्टि से चाहे कोई कुछ हो क्यों न कहता रहे इस अनुभव के आधार पर मैं भक्ति मार्ग का अनुयाई हूं क्योंकि ज्ञान की या अनुभव की अवस्था में हर समय रहना और ठहरना असम्भव है। इसलिए मैं उस शक्ति का सहारा या आसरा लेता रहता हूं जो सुरत का भण्डार है यदि

किसी कारण मुझमें गिरावट आ जाती है तो उस गिरावट का जो मन में शोक होता है वह इस भक्ति के सहारे समाप्त हो जाता है। इसलिए सन्तों के मार्ग में ज्ञान योग के स्थान पर भक्ति मार्ग को अपनाया गया है क्योंकि यह ज्ञान योग से सरल मार्ग है।

अगर तुम लोग दुख औंर सुख को अनुभव नहीं करते तो बहुत अच्छा है मगर यह अवस्था साधन और अभ्यास के बिना आती नहीं है। पहले सुमिरन और ध्यान है फिर प्रकाश और शब्द का साधन है उसके बाद अनुभव हो जाने पर तुम अपने रूप में ठहर सकोगे।

फूल मध्य ज्यों वास समाना
मेंहदी की लाली परमाना।
चकमक मध्य आग विराजा
राज विचित्र करे महाराजा।

चूम्बक में आग है, मेंहदी में लाली है मगर जब तक रगड़ो नहीं वह प्रकट नहीं होगी। ऐसे ही जब तक साधन नहीं करोगे वह वस्तु तुमको प्राप्त नहीं होगी। ज्ञान की दृष्टि से चाहे कोई कुछ कहता फिरे--

प्राण का प्राण जान का जान, देह अदेह विदेह बखान,
अर्थ धर्म काम का दाता, अधिकारी को मुक्ति दिलाता,
काम अकाम अनर्थ अर्थ जो, मुक्त अमुक्त है धर्म मर्म जो ।

सब कुछ है और कुछ नहीं, कहा सुना नहीं जाय,
कथन सुनन विन जीव से, चुप भी रहा न जाय ।

देश अदेश विदेश महाना, रूप अरूप स्वरूप बखाना
अगुन सगुन गुणवान है सोई, मायातीत शक्ति धर होई
जड़ नहीं चेतन कैसे कहूं, जड़ चेतन लखि मौनी गहूं ।

मौन हो जाना अन्तिम अवस्था है । एक मौन बानी का है लेकिन यह पूरा मौन नहीं है । पूरा मौन वह है कि मन से संकल्प न करे । प्रकाश, अप्रकाश हो जाए और शब्द अशब्द हो जाए, वो हमारी आध अवस्था है जहां से हम आए हैं या प्रकट हुए हैं, यह है असली मौन । जब तक हम बोलते हैं हम निचली अवस्था में है । ऊपर की अवस्था में कहना सुनना नहीं है मगर जब तक शरीर है हस बोलने के लिए विवश हैं । यह शब्द सिद्ध करता है कि कोई भी सन्त मौन न रह सका इसलिए जब तक यह जीवन है उस अवस्था को ध्यान में रखो और इस संसार में काम करो । यही जीवन मुक्त अवस्था है । मैं अपनी त्रुटियों को

छुपाता नहीं, इसलिए तो मैं कहता रहता हूं कि भई ! मैं बहुत बार गिर जाता हूं । किसी समय मुझे क्रोध आ जाता है । अगर मुझे क्रोध न आए तो मैं समझूं कि मैं नहीं गिरता । अगर मन्दिर में कोई चार पैसे दे जाता है और मैं खुश हो जाता हूं तो मैं समझता हुं कि मैं गिर गया । अगर किसी की मौत पर शोक न हो तो समझलो हम गिरे नहीं । मैंने ऊपर वर्णन किया है कि बम्बई से रसूल आजाद आया और मन्दिर में रुपया दे गया मुझे भी खुशी हुई, वो मेरा गिरना था, मगर अपनी जान को बचाने के लिए मैंने उससे बिलकुल साफ और सच्ची बात बता दी । दूसरे महात्मा ऐसी बात नहीं करते हैं, वह तो रुपया देने वाले की प्रशंसा करते हैं। इससे पता चलता है कि सन्त गति को प्राप्त करना बड़ा कठिन है और सन्त गति में रहना महा कठिन है । मैं गिरता रहता हूं मगर संभल जाता हूं ।

जड़ चेतन में व्यापा सोई, बिन आधार ठहरे नहिं कोई ।
सत, तप, महः, जनः ऋषि वखाने, सोई भूः भुवः मुनि जन जाने ।

जोत निरंजन सहस दल त्रिकुटी पद ओंकार
सुन्न महासुन्न हंस गति भंवर का सोंहग सार ।

नहीं विराट नहीं अव्याकृत, कही हरिण्य गर्भ करे चरित्र,
कर चरित्र सब में मन भाया, सबसे मिल जुल रह भल
गाया,
अलग बिलग ताकी गति नाँही, प्रतिबिम्वित रहे बुद्धि
माँही,
मति नही लख सुमति लख पाए, विनती निगम गम इति
बतावे,
ऐति नेति दोनों से न्यारा, पार अपार बार के बारा ।
सत पुरुष सतलोक का, अगम अलख निरवान
राधास्वामी धाम में, राधास्वामी जान ।

उस परम तत्व को बुद्धि नहीं देख सकती केवल शुद्ध विचार उसको समझ सकता है । मैं वो तत्व किसी को दिखा नहीं सकता मगर उसको देखने का गुर बता सकता हूं । जो चीज प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वो है सार और वह भी सबका बोधभान करती है । जिसको अपने रूप का ज्ञान हो जाए तो फिर मन के चक्कर में नहीं आता, न उसको हर्ष है और न उसको शोक है । मैं तो भई ! अभी तक फंस जाता हूं, हां ! यत्न जरूर करता रहता हूं कि न फंसू ।

सबको राधास्वामी

सत्संग हुज़ूर परम सन्त पं. फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक २८ दिसम्बर १९७४

जो कोई घर की ओर सधावे,
सहज भेद मुक्ति चित लावे।
जल थल पावक गगन समेरा,
पांच तत्व से बना शरीरा।
पाँच तत्व के पांच अस्थान,
कोई कोई जाने चतुर सुजान।

राधास्वामी ! आप लोग बाहर से मेरे पास सत्संग के लिए आए हैं। यह वाणी आप लोगों ने सुनी और मैंने भी सुनी। मुझे वाणी भेद नहीं देती थी। यह जितने नाम अर्थात् ब्रह्म, जीव और माया है यह पिछले युग के धार्मिक जगत के रखे हुए हैं। पहले मैं सुना करता था कि मानव के मस्तिष्क में सहस दल कमल, त्रिकुटि, सुन, महासुन आदि स्थान होते हैं, मैं उनको देखना चाहता था।

मुझे संसार को देख कर विचार आया कि मानव कहां से आता है ? मां के पेट से बच्चा बन कर आता है। कौन बनाता है ? बाप के वीर्य का Spermatozoa Gern । बाप ने जो अन्न खाया उससे रक्त बना रक्त से ओजस और ओजस से वीर्यमें वह कीटाणु Germ पैदा हुआ। ऐसी घटनाएं भी देखने में आई हैं कि बाप के वीर्य के बिना ही बच्चे पैदा हुए। मां के पेट के अन्तर जो अग्नि है उससे जीव पैदा हो जाता है जैसे ईसा मसीह और हनुमान पैदा हुए। समाचार पत्रों में घटना छपी थी कि अमेरिका में एक कुंवारीं लड़की को बच्चा पैदा हुआ, उसने बताया कि मैं किसी पुरुष के पास नहीं गई, उसका डाक्टरी परीक्षण हुआ, खोज की गई और वह सच्ची सिद्ध हुई। फिर उसके बाद कई स्त्रियों ने ऐसी बातें बताई। तो इससे सिद्ध होता है कि यह वीर्य का किटाणु पुरुष या स्त्री के अन्तर स्वाभाविक तौर से ही पैदा होता है।

जब यह समझ आई तो इस से मुझे विश्वास हो गया कि यदि में अपने आद घर को देखनां चाहूं तो मैं वीर्य के किटाणु की जो अवस्था थी उस अवस्था

में आऊं उस कीटाणु में जो शक्ति है उसका नाम है प्रकाश । प्रकाश के बिना रचना नहीं हो सकती अब मैं जब अपने आद धर को वापिस जाता हूं तो अपने सारे विचारों, आशाओं और वासनाओं को छोड़ जाता हूं । जैसे सूर्य की किरणें बीज को फोड़ कर उसके पत्ते, फल और फूल पैदा कर देती है ऐसे ही वह प्रकाश जब उस वीर्य के कीटाणु में आता है तो उसमें जो वासनाएं और आशाएं छुपी हुई होती हैं वह उभर जाती हैं । अपने आद घर जाने के लिए इन वासनाओं और आशाओं को छोड़ना पड़ेगा । यह कैसे छोड़ोगे ? सुमिरन, अजपाजाप और ध्यान योग से यह छूटेंगी । मैंने बड़े २ ज्ञानी, ध्यानी और अभ्यासी देखे हैं, वह अपने अन्तर में रूप बनाते हैं और उससे बातें करते हैं, कोई कहता है कि मेरे अन्तर में श्री राम आता है, कोई कहता है कि मेरे अन्तर श्री कृष्ण आता है, कोई कहता है कि मेरे अन्तर हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आते हैं, और कोई कहता है कि मेरे अन्तर बाबा फकीर आते हैं । इनमें से कोई भी अपने घर नहीं जा सकता । इसलिए यह नाम उनके लिए है जो अपने घर जाना

चाहते हैं। अपने आद घर जाने के लिए मेरे पास कौन आता है ? इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। ऐसे आदमियों के लिए वेद मार्ग है "शिव संकल्पमस्तु"। आशावादी रहो। अपनी वासनाओं को ठीक रखो। अपनी नीयत को ठीक रखो। सुख और शान्ति से जिओ और आनन्द लो।

निवृत्ति मार्ग केवल उनके लिए है जो अपने घर वापिस जाना चाहते हैं और जो धन मान या सांसारिक वस्तुएं चाहते हैं उनके लिए है सुमिरन और ध्यान। इससे उनकी (Will Power) अर्थात् संकल्प शक्ति प्रबल हो जाएगी और इससे उनकी मनोकामनाएं पूरी होती रहेंगी जैसे कि खेती को खाद और पानी देने से खेती अच्छी और सफल हो जाती है। तुम्हारे अन्तर वीर्य के Spermatozoa Germ में जो वस्तु है या यूं समझो कि जो sensation अर्थात् चेतना है वह है जीव और वह प्रकाश से बनी। प्रकाश ही ब्रह्म है। ब्रह्म के अर्थ हैं बढ़ना और मनन करना। ब्रह्म ही सब जगह फैलता है। जो आदमी इस संसार में सुखी रहना चाहता है उसको चाहिए कि वह शिव संकल्प रखे, सुमिरन

ध्यान करे और अपने मन को एकाग्र करे, चाहे किसी भी विधि से करे, पांच नाम से करे, राधा-स्वामी नाम से करे, राम राम से करे या अल्ला हू से करे यह तो केवल शब्दों के झगड़े हैं। अपने जीव पने को खाद और पानी दो ताकि यह बढ़े, फूले और जीवन अच्छा गुजारे। जो इस अवस्था से आगे जाना चाहते हैं वह प्रकाश और शब्द का साधन करें। यदि कोई गुरु स्वरूप का ध्यान न करना चाहे तो बेशक न करे लेकिन विशेष २ प्रकृति वाले व्यक्ति सेवन किए गए अन्न और प्रालब्द कर्म के अनुसार गुरु स्वरूप का ध्यान करने के सिए विवश हैं। क्योंकि जो अन्न तुम्हारे मां बाप ने खाया या तुमने खाया वह चांद सूर्य या नाना प्रकार के ग्रहों की किरणों से बना और उन ग्रहों का प्रभाव तुम्हारे अन्तर में होना अनिवार्य है। इसलिए अभ्यास के समय वही प्रभाव या वही रूप तुम्हारे सामने आएंगे। यही कारण है कि सबसाधकों का अभ्यास एक जैसा नहीं होता और न ही इनका अभ्यास सदा एक जैसा रहता है। उन ग्रहों के प्रभाव के अनुसार और तुम्हारे अन्न के अनुसार ही तुम्हारे अन्तर विचार पैदा होंगे। लाख यत्न करने पर भी विचारों में

परिवर्तन आना कठिन है। जिनके ग्रह शुभ हैं उनके विचार भी शुभ होते हैं और जिनके ग्रह नीच हैं उनके विचार भी पवित्र नहीं होते।

गुरु स्वरूप का, राम या कृष्ण का जब कोई ध्यान करता है या जप तप करता है तो उसके मन में प्रेम होता है और उस प्रेम के कारण एकाग्रता शीघ्र आ जाती है इसलिए शास्त्रों ने या सन्तों ने सरगुण स्वरूप का इष्ट बताया है ताकि प्रेम के कारण मन की वृत्तिएं शीघ्र एकाग्र हो जाएं। जिन आदमीयों पर नीच ग्रहो का प्रभाव होता है और उसके विचार ठीक नहीं होते उनको सतोगुणी भोजन करना चाहिए, इससे कुछ अन्तर अवश्य पड़ जाएगा। रजोगुणी और तमोगुणी भोजन का प्रभाव और होता है जैसे बीमारी को रोकने या दूर करने के लिए दवाई की आवश्यकता है ऐसे ही मन के बुरे विचारों को रोकने के लिए शुद्ध अन्न, अच्छी संगत, अच्छी किताबों को पढ़ना और किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग अति आवश्यक है, इससे मन में परिवर्तन आ जाता है। इसलिए कहा गया है--

षठ सुधरें सत्संगत पाई

इसलिए यदि तुम्हारा मन गन्दा है और तुम इसके कारण अशान्त हो और इससे छुटकारा चाहते हो तो अपनी संगत अच्छी रखो, अपना भोजन अच्छा रखो और अपने विचार अच्छे रखो। शराब और मांस इसीलिए बन्द किया गया है कि मन शुद्ध नहीं रहता। मन को शुद्ध रखने के लिए शरीर और कपड़ों की सफाई अति आवश्यक है। जो आदमी गन्दा रहता है उसके मन पर भी उसके शरीर और कपड़ों की गन्दगी का प्रभाव पड़ता है। इसलिए हिन्दुओं में पूजा पाठ के लिए एक ही साफ सुथरी पोशाक रखी जाती थी और साधन के लिए एक ही स्थान होता था उस स्थान के वातावरण में भक्ति भाव के विचार एकत्रित हो जाते हैं। जिस प्रकार भोजन के समय हर एक व्यक्ति की स्वाभाविक ही भूख बढ़ जाती है ऐसे ही पूजा पाठ के समय साधक का मन अपने आप साधन करना चाहता है। प्रारम्भिक अवस्था में यह साधना के नियम हैं। ब्राह्मणों के यहां रसोई में काम करने के लिए अलग वस्त्र होते थे। ब्राह्मण विधवा स्त्री के हाथ का बना हुआ भोजन सेवन नहीं करते थे क्योंकि

उसका हृदय सदा सन्ताप से भरा रहता था और वही प्रभाव भोजन में जाता है लेकिन विधवा मां के हाथ का बना हुआ भोजन खा लिया करते थे क्योंकि मां के दिल में प्रेम प्यार होता है।

ज्योति स्वरूप ही सहस दल कमल है। जब प्रकाश शरीर में आता है तो मां बाप के भोजन के प्रभाव और उनके विचारों के प्रभाव के अनुसार मन के अन्तर अनेक प्रकार की वासनाएं और विचार धाराएं प्रकट हो जाती हैं। प्रकाश में जाने से आदमी ब्रह्ममय हो जाता है, प्रकाश ही ब्रह्म है और प्रकाश ही जीव बन जाता है। जीव और ब्रह्म एक ही वस्तु है।

अच्छी किताबें पढ़ो, अच्छी संगत रखो और अपने भोजन में संयम रखो। तमोगुणी और बासी भोजन मत खाओ। भोजन का बहुत प्रभाव होता है। कल रेडियो पर सुना था कि गर्भवती स्त्री को विशेष प्रकार का भोजन देने से बच्चे का रंग गोरा हो जाता है। पिछले समय में घोड़ी के बच्चे का रंग बदलने के लिए घोड़ी के कान में किसी विशेष प्रकार की दवाई डाली जाती थी जिससे जिस

प्रकार का रंग चाहते थे उसी रंग का बच्चा पैदा होता था।

जो आदमी अपने आद घर वापस जाना चाहता है उसको सबसे पहले सत्संग की आवश्यकता है ताकि उसको बात की समझ आ जाए और जब यह विश्वास हो जाए कि यह मार्ग ठीक है तब साधन करके वह आदमी आगे जा सकता है अन्यथा नहीं। बाहर के गुरु का यह कर्तव्य है बल्कि उसकी यह महानता है कि वह जीव को यह विश्बास करा दे कि इस साधन से तुमको यह वस्तु प्राप्त हो जाएगी। जब तक किसी को इस बात का पता नहीं कि उसका ध्येय क्या है और उसका मार्ग कौन सा है उसका साधन निष्फल है, बल्कि सच्चाई तो यह है कि साधन में उसका मन लगेगा ही नहीं। जैसे आप लोग स्कूल मास्टर हैं, यदि आपको यह विश्वास न हो कि महीना समाप्त होने पर आपको वेतन मिल जाएगा तो काम करने में आपका दिल नहीं लगेगा और न ही आपको बच्चों को पढ़ाने में कोई रुची होगी। स्वामी जी ने कहा है—

बिन सतसंग जो शब्द में पचते वह भी मूर्ख जान

लाखों आदमी नामधारी हैं, किसी ने किसी स्थान से और किसी ने किसी जगह से नाम लिया हुआ है, क्योंकि उनको अपने ध्येय का पता नहीं है इसलिए वह अशान्त हैं। दो तीन दिन हुए दिल्ली से एक स्त्री का पत्र आया। उसने मेरे गुरु भाई दीवान चन्द से नाम लिया हुआ था। दीवान चन्द मर चुका है। वह अभ्यास करती रही। अपने अन्तर में लाल रंग का सूर्य देखा और उसमें गुरु स्वरूप को भी देखा। ओं की ध्वनि, ररंग सारंग, मुरली और बीन भी सुनती रही, इतना अभ्यास करने के बाद भी वह स्त्री अशान्त है।क्यों ? क्योंकि उसको गुरु नहीं मिला। गुरु नाम है समझ और ज्ञान का। गुरु ने उसको यह नहीं बताया कि साधन है किस वास्ते ? तुम्हारा ध्येय क्या है। साधन करने का लाभ क्या है ? इन बातों का पता बाहरी गुरु से मिलता है इसलिए गुरु की महिमा है। आजकल कोई महात्मा ऐसी शिक्षा नहीं देता। नाम देने वाले महात्मा और गुरु केवल अपना दायरा बढ़ानें, रुपया एकत्र करने और अपने नाम के लिए लोगों को नाम देते हैं। मुझे क्योंकि हजूर दाता दयाल जी

महाराज की आज्ञा है कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना, इसलिए निज अनुभव के आधार पर बदल रहा हूं । बात तो वही है मगर में इस ढंग से वर्णन करता हूं कि सबकी समझ में आ जाती है और उसको कोई काट नहीं सकता। जिस प्रकार सूर्य की किरणें वृक्षों में फूल, फल और पत्ते पैदा कर देती हैं, ऐसे ही जब प्रकाश विन्दु में आता है तो नाना प्रकार की वासनाएं पैदा हो जाती हैं। यह तो होंगी ही क्योंकि प्रकाश से ही रचना होती है। जिनको यह अनुभव हो जाता है कि यह वृक्ष एक दिन समाप्त हो जाएगा, उनके अन्तर में अपने आद घर जाने की इच्छा पैदा होती है और इस संसार से वैराग्य पैदा हो जाता है—

बिषयों से जो हुए उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जा के, खोजत फिरे साध गुरु जाके।

ऐसे आदमी नाम के अधिकारी होते हैं, उनके लिए सावित्री से आगे का साधन है। साधारण लोगों के लिए सुमिरन, ध्यान और सावित्री अर्थात् प्रकाश का साधन है। साधन तुम्हारे प्रवृति मार्ग में तुम्हारा सहायक होगा और फिर जब तुम, अनुभव हो जाने

के बाद, आगे जाने की इच्छा करोगे तो यही साधन फिर भी तुम्हारी सहायता करेगा। उस साधन से तुम्हारी संकल्प शक्ति प्रबल हो जाएगी और तुम्हारा जीवन अच्छा व्यतीत हो जाएगा, सुखी रहोगे और मन को शान्ति मिलेगी।

सबको राधास्वामी

सत्संग हजूर परम संत परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

तिथि ३० दिसम्बर १९७४

जब कुछ दिन सत्संग अभ्यास, तब गुरुमुख गुरु का निज दास
गुरु हद बैठ सहारा देवे, चेला बेहद चढ़ सुख लेवे।

राधास्वामी ! मास्टर साहेबान ! आप लोग आए हैं मेरी बात को ध्यान से सुनो, पहले सत्संग करो, फिर अभ्यास शुरू करो, तब तुम दास कहलाने के अधिकारी बनोगे। मैं अपने आप से पूछता हूं कि भई। गुरु के दास तो तुम बन गए लेकिन तुमको मिला क्या ?

गुरु हद बैठ सहारा देवे, चेला बेहद चढ़ सुख लेवे।

कौन समझेगा इस बात को। गुरु हद में बैठ कर सहारा देता है, गुरु तो हद में ही रह जाता है और चेला पार हो जाता है। गुरु ने हद में बैठ कर चेले को सत्संग कराया और सहारा दिया और

बेहदी में ले गया। जिस अवस्था में बैठ कर गुरु सत्संग कराता है चेला उससे आगे चला जाता है। मैं कैसे आगे गया ? हजूर दाता दयाल जी महाराज इशारा किया करते थे और मुझे समझ नहीं आती थी। जब उन्होंने देखा कि इसको समझ नहीं आती तो उन्होंने फरमाया कि तुमको काम देता हूं मेरा हुक्म मानो तुमको राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। अब तुम सत्संगियों ने मुझे सहारा दिया और ज्ञान दिया इसलिए मैं पार हो गया। तुम लोगों ने मुझे क्या सहारा दिया ? तुम लोगों ने बताया कि मेरा रूप आपके अन्तर प्रकट होता है और तुम लोगों के अनेक प्रकार के काम कर जाता है लेकिन मैं तो जाता नहीं इसलिए तुम्हारे इस सहारे से मुझे यह पता लग गया कि मेरा घर रंग रूप और शक्लों से परे है। हजूर दाता दयाल जी मुझे सहारा देते थे शब्द लिख कर भेजा करते थे—

१. गुरु तो तेरे पास फकीरा, गुरु तो तेरे पास।
२. तू है क्या तू मरकजे आलम है, ए मरदे फकीर।
फिर रही है गिर्द तेरे, दुनिया खुद होकर असीर।।

यह काम मुझे इसलिए दिया गया था कि जिस चीज को मैं तलाश करता था वो मुझे मिल जाएगी। इस शब्द में वो कहते हैं कि गुरु हद में था। वो हद क्या है ? शरीर और मन। मैं अब वाणी कह रहा हूं तो शरीर और मन में बैठ कर ही तो बोल रहा हूं। अगर सुनने वाले को तलाश है तो फिर उसकी सुरत कहां जाएगी ? मन से यानि हद से पार हो जाएगी। तुम लोग आए हो मैं शरीर और मन में गुरु के रूप में बैठा हुआ बोल रहा हूं कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। अगर तुम लोग सचमुच सत्संग के लिए आए हो तो मैं तुमको सच्चाई ब्यान करके मंजिल तक पहुंचाना चाहता हूं। तुम लोग कहते हो कि में तुम्हारे अन्तर जाता हूं और मैं कहता हूं कि मैं नहीं जाता तो फिर इससे तुम लोगों को समझ आ जाएगी और तुम बेहदी में चले जाओगे। शरीर और मन को भूल जाओगे। मैं भी हद में बैठ कर बोल रहा हूं और तुम लोग भी हद में बैठ कर सुन रहे हो। अगर तुम मेरी बात को समझ जाओगे तो तुम्हारीसुरत तुम्हारे शरीर और मन की हद से दूर चली जाएगी। ऐसे ही जब मैंने आप

लोगों की बात सुनी तो मुझे यकीन हो गया और अब मैं बेहदी में चला जाता हूं।

हद बेहद के परे ठिकाना, सत लोक सतगुरु अस्थाना।

मन के मण्डल से निकल गया और बेहदी में चला गया। बेहदी में जा कर उस चीज की तलाश करता हूं जो हमारे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। वो चीज बेहदी से परे है और बेहदी में आ कर अपना पता बताती है। वो पता क्या है ? गुर धाम। राधास्वामी धाम या अनामी धाम। उसी अनामी धाम से आकर मैं तुम लोगों को या संसार को बता रहा हूं कि तुम्हारा असली रूप क्या है ? अनामी धाम से केवल मैं ही नहीं आया तुम सब लोग वहां से ही आए हो और वो ही हम सबका रूप है।

वहां गुरु का पावै भेद, नहीं वहाँ कथा कतेव न वेद

वहां जाने से पता लगता है कि गुरु क्या चीज है। वहां न जबान से कोई बात होती है और न कोई कथा होती है। वहां यह भी नहीं कहा जाता कि गुरु उस तिथि को पैदा हुआ और उस तिथि को मर गया। राधास्वामी

मत के अनुसार वो गुरु क्या है ?

'अख अपार अगाध अनामी"

वो वहां से आकर और हद में बैठ कर जीवों को अपने घर का पता देता है ।

यहां कथा, वहां कथा नहीं है
कैसे कोई समझे, कथे वही है

यहां तो हम बातें करते हैं लेकिन वहां की अवस्था को कोई व्यान नहीं कर सकता अगर कोई कर सकता है तो वो खुद ही कर सकता है ।

नही कथनी का देश वो, अनुभव गीत मनसार ।
सो तो निश्चय पाइए, सतगुरु के उपकार ।

वो एक ऐसी अवस्था है कि यहां कहना सुनना या सोचना या गाना नहीं है । मैंने अपने आप को संसार में सन्त सतगुरु वक्त कह कर प्रकट किया है अपने आप से पूछता हूं कि तुम क्या करते हो ? मैं सच्चाई व्यान करता हूं सतगुरु के उपदेश से इस राज़ को समझ कर आदमी आगे जा सकता है । कोई गुरु गद्दी वाला या कोई डेरे वाला ऐसी शिक्षा नहीं देता । जब तक किसी आदमी को इस बात का विश्वास नहीं कि उसके अन्तर जितने रंग रूप पैदा

होते हैं या जितने भाव या विचार पैदा होते हैं यह सब माया है, उसका तो फलक भी बेहदी में या बेहदी से परे नहीं जा सकता। संतो ने इशारे किए मगर साफ ब्यानी नहीं की गोसांई तुलसीदास ने भी कहा है :—

गौ गोचर जहां लग मन जाई।
तहां लग माया कृत जानओ भाई।

मगर रामायण को पढ़ने वाले और राम रूप देखने वाले सारी जिन्दगी और काम में रहे, वो इस माया से अलग कैसे हुए ?

अकथ अलौकिक अगम कहानी, जान अजान सुजानी अजानी

वो तो अकथ बात है वो कही नहीं जा सकती। उस अवस्था को कोई ब्यान नहीं कर सकता। जिसने समझ लिया बस उसने समझ लिया। मुझे समझ नहीं आती थी इसलिए मुझे यह काम दिया था ताकि मुझे अपने घर का पता लग आए। क्योंकि मुझे तालीम को बदल जाने और सत्संग कराने का हुक्म दिया था इसलिए यह मेरा कर्म भोग है किसी पर कोई एहसान नहीं है।

नहीं वह सत्त असत कहावे, बिना कहे क्यों समझ में आवे

सत है प्रकाश और शब्द और वो जो चीज है जो सत और असत को देखती है और सुनती है वो सत से परे है ।

समझ बूझ की पहुंच से पार, समझ बूझ तिसके आधार ।

वो है ज़ात और वो ही तुम हो । अपने अन्तर दाखिल हो कर देखो तब तुमको पता लगेगा कि तुम कौन हो । तुम वो हो जो शब्द में रहते हुए शब्द को सुनते हो और प्रकाश में रहते हुए प्रकाश को देखते हो । मैं भी वो ही हूं । यह करनी का विषय है अमल का मजमून है ।

नहीं तुरिया नही तुरयातीत, नही उष्ण नही वह शीत ।

वो न तुरिया है ना तुरियातीत है । तुरिया क्या है ? जागृत स्वपन और सषुप्ति जब एक हो जाते हैं तो उसका नाम है तुरिया । जब गहरो नींद से होश में आने लगते हो तो उस वक्त न नींद होती है और न होश होती है और न ही वो स्वपन की अवस्था होती है उस अवस्था का नाम है तुरिया । जब तुम अपने अन्तर में प्रकाश को देखते हो, तो उस समय तुमको चेतनता होती है और जब प्रकाश होने लगता है तो उस समय गनूदगी आ जाती है

जैसे छो` बच्चे एक खेल खेलते हैं। एक जगह खड़े २ अपने पूरे जोर से घूमते हैं, जब थक जाते हैं तो बैठ जाते हैं, बैठने से थोड़ी देर के लिए जो दिमाग की अवस्था होती है—उस अवस्था का नाम शरीर की तुरिया है, इस अवस्था का नाम खुदमस्ती भी है—खुदमस्ती बेहदी में आती है और खुद फरामोशी बेहदी के परे की अवस्था में है—

अन्धे हाथी हाथ टटोले, कहते निज मन भिन्न २ बोले।

सब उसको ढूण्ढने निकले जिसने जो हिस्सा देखा उसने वो ही व्यान कर दिया किसी ने उसको साकार कहा, किसी ने निराकार कहा, किसी ने उसको शब्द कहा और किसी ने प्रकाश कह दिया लेकिन वह इन सबसे परे है। वो जागृत स्वपन सषुप्ति तुरयातीत और इससे भी बहुत परे है और वो ही तुम्हारी अवस्था है, जिस अवस्था को किसी ने देखा उसने वो ही व्यान कर दी इसलिए पूर्ण गुरु की सबसे ज्यादा जरूरत है—

सबमें है सबसे पृथक, है नहिं नहिं है सब सोय।

वो जो चीज है जो तुम खुद हो वो ही चीज शब्द में आ कर शब्द को सुनती है, वो चीज प्रकाश

में आकर उसको देखती है इसलिए वो सब में है लेकिन वो सबसे न्यारी भी है। कैसे ? जब तुम ऊपर चले जाते हो तो फिर तुम इन सबसे न्यारे हो जाते हो और नीचे आ जाते हैं तो तुम ही इन सब में हो, इसलिए वो चीज सबसे अलग भी है और सब में भी है। मालिक को तो वो जान सकता है जो पहले अपनी Study करता है। स्वामी जी महाराज में कहा है—

आप आप को आप पहचानों, कहा और का नेक न मानो

गुरु नानक साहिब ने भी कहा है—

कह नानक बिन आप चीने, मिटे न भ्रम की काई।

× × ×

गुरु की दया अपार बिन. लख पावे नहीं कोय

गुरु की दया के बिना कोई कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु क्या करता है ? बचन कहता है और तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारे मन और तुम्हारी रूह को असलियत का यकीन करा देता है। गुरु फूंक नहीं मारता। गुरु की दया सत्संग से मिलती है। मैं यह दया ही तो कर रहा हूं, जिस राज़ और भेद को

सन्तों ने गुप्त रखा, मैं वौं मफ्त में बांट रहा हूं। पिछले समय में जिन चेलों ने गुरु की बहुत सेवा की, उनको यह राज़ मिलता था। लेकिन मैं मुफ्त में बांट रहा हूं मगर मुफ्त की चीज की कोई कदर नहीं करता। हमको तलाश थी और हमने कदर की। आप लोगों से ज्ञान मिला, इसलिए आप लोगों को सच्चा सतगुरु समझ कर आपकी सेवा करता हूं।

अकथ कहन में कैसे आवे, बिना कहे कोई क्या बतलावे।

पिछले सन्तों ने केवल इशारा किया और सैन बैन ही किया, मैंने साफ व्यानी का डंडा हाथ में ले लिया। यह साफ व्यानी मेरा डंडा है, जैसे हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि तुम लोग मेरो बात को सुनते नहीं हो कोई डंडे मारने वाला आएगा और वो तुमको सभझाएगा अब वो डडे वाला मैं हूं, मेरी साफ व्यानी मेरा डंडा है।

आप लोगों को सांसारिक चीजों की जरूरत है, यह संसार का व्यवहार भी है। संत दयालु होते हैं, उनके पास अमीर लोग आते है' उनके पैसे

से भूखे को रोटी, बीमार को दवाई और हाजतमंद, की जरूरत पूरी होती रहती है। हकीकत को जानने वाले बहुत कम आते हैं।

सैन बैन की युक्ति न्यारी. हद बेहद चढ़ कोई विचारी।

गुरु इशारा करता है, उस इशारे को कोई ही हद बेहद से परे जाकर विचार करता है, कि गुरु ने क्या कहा है—

नहीं वह वुन्द न सिंध समान, नहीं मिलाप गुम नही अमगान

वहाँ बूंद या समुद्र या मां या बाप या गुरु या चेले का कोई ख्याल नहीं रहता, क्योकि वहां खुद फरामोशी है वहां तो यह भी पता नहीं होता कि मैं कौन हूं। एक शरीर की गहरी नींद है और यह ऊपर की गहरी नींद है। मगर इस अवस्था का पता तुमको तब चलेगा जब तुम साधन करके ऊपर जाओगे। नींद में गलफत होती है, मगर वहां खुद-मस्ती में चेतनता रहती हैं। खुद फरामोशी में कुछ बाकी नहीं रहता, इसका नाम है Supermost Consciousness बुलबुला टूटा और समुद्र में मिल गया।

लब खुले और बन्द हुए, यह राजे जिन्दगानी है।
यहां तक मेरी जुस्त जूं की कहानी है।

कहूं क्या जात मेरी फानी है या लाफानी है।

हुजूर दाता दयाल जी आगे फरमाते हैं—

रूप अरूप सरूप बहीना· राव रंक नही दीन प्रबीना।

जब मन की समाधी लग जाती है तो उस समय कोई होश नहीं होती और यह सारा संसार भी आलोप हो जाता है।

जीव न ईश न ब्रह्म न माया, नाम अनाम सनाम कहाया।

वो भी हमारी ही एक अवस्था है, हम सब और हर एक चीज वहां से ही आई है।

अदम से जानिबे हस्ती, तालाशे यार में आए

वो जो अवस्था है उसको व्यान करने के लिए कोई शब्द नहीं है, यह तो अमल का सवाल है और व्यान से बाहिर है।

जीव मुक्त न विदेह है· कैसे कहूं सुझाय।
राधास्वामी सैन लख, अनुभव में कछु आय।

आप लोग आए हैं, गलत साधन करने की जरूरत नहीं है। अपनी सुरत को मन से दूर प्रकाश और शब्द में ले जाओ, जितनी जल्दी हो सके, अन्तर के रूप रंग भाव और विचारों को छोड़ दो। मगर प्रत्येक आदमी जल्दी से छोड़ नहीं सकता। यहां आकर मैं फेल हो गया। खास २

प्रकृति वाले आदमी ग्रहों के मुताबिक इस तरफ आते हैं। यह उस मालिक की मौज है।

स्वामी जी महाराज ने कहा है—

जिस पर दया आद कर्ता की, सो यह नहमत पाए।

अब तुम लोगों को यह भ्रम नहीं रहेगा कि बाबा चरण सिंह जी महाराज गुरु है या बाबा फकीर गुरु है या कौन गुरु है। असली और सच्चे गुरु का रूप तुम लोगों को समझा दिया, अब तुमने सोच समझ के साथ साधन करना है, मगर साधन भी अपने बस में नहीं है। जिसका समय आया हुआ होता है, वो इस तरफ आता है। अगर कोई चाहे, कि मेहनत करके इस तरफ आ जाऊं, वो नहीं आ सकता। मेरे इस सत्संग से तुम्हारे भ्रम दूर हो जाएंगे और तुम यह भटका नहीं खाओगे कि किस गुरु के पास जाएं।

मुझे अनुभव हो गया, और अब मैं बच्चों की तरह जिन्दगी गुजारता हूं। न कोई चीज मिल जाने से खुशी होती है और न कोई चीज चले जाने से अफसोस होता है। उसकी मौज पर रहता हूं।

स्वामी जी ने भी कहा है—

बाल रूप होय जग को छीके

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने हुक्म दिया था कि चोला छोड़ जाने से पहले तालीम को बदल जाना। उनके हुक्म की तालीम में मैंने वो कहा जो खुद अनुभव किया। गल्त है या ठीक है इसका मुझे पता नहीं है। समझ आ गई कि वो मालिक बेअन्त हैं और सब उसका खेल है। इस अवस्था में आकर खुश रहने की कोशिस करता हूं।

सबको राधास्वामी

सतसंग हजूर परम सन्त परम दयाल
बाबा फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक ३१ दिसम्बर १९७४

बन्दनम् सत ज्ञान दाता, बन्दनम् सत ज्ञान मय।
बन्दनम् निर्वाण राता, बन्दनम् निर्वाण मय॥
भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आप के आधीन सब।
आप ही हैं सिंध सद्गति. जीव जन्तु मीन सब॥
आप गुरु सतगुरु दया, और प्रेम के भण्डार हैं।
आप करता धरता हैं, करतार जगदाधार हैं॥
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नवनिधि, हैं चरन में आपके।
बच गया भव दुख से जो गया शरण में आपके॥
भक्ति दीजे नाम की, सतनाम में विश्राम दे।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे॥

राधास्वामी ! अध्यापक गण ! आप आए हैं। गुरु ने क्या दिया ? ज्ञान। मैं स्वयं तो राधास्वामी मत में आया नहीं। मुझे मालिक को मिलने की इच्छा थी इसलिए मुझे खोज थी और इसके लिये

मेरे अन्तर में तड़फ थी और सच्चा जजबा था। मैं रोया करता था। एक दिन मेरा एक दृश्य २४ घण्टे रोने के बाद मुझे हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गया। उन्होंने मुझे सन्तमत या राधास्वामी मत की शिक्षा दी। मैं उनको मालिक का रूप समझता था और उनसे प्रेम करता था और उनकी सेवा करता था। उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। इस शब्द में आया है—

बच गया भव दुख से जो. आया शरण में आपके।

मैं एक सत्य प्रिय व्यक्ति के तौर पर अपने आप सें प्रश्न करता हूं कि सच बता फकीर ! क्या तू भव दुख से बच गया ? जिस उपाय से मैं बचा मैं वह आपको बता सकता हूं। आप लोग आए हो मैं अपनी आत्मा को साफ रख कर जाना चाहता हूं। मैं कैसे के भव दुख से बचा ? सुनो। रात को रेडियो पर सुना कि पाकिस्तान में भूचाल आया है और कई गांव बरबाद और उजाड़ हो गए। हजारों आदमी मर गए। क्यों ऐसा हुआ ? मैं सदा कहा करता हूं कि कर्म का फल सबको

भोगना पड़ता है मगर सोचता हूं कि क्या उन देहात के सभी लोग पापी थे जो सब एक ही बार मर गए ? ससार में (जगह जगह) पर बाढ़ें आती हैं, तूफान आते हैं और भूचाल आते हैं। क्या यह हमारे कर्म हैं या इस संसार को बनाने वाले के कर्म हैं ? -रात को सोचता रहा कि क्या इन सबने ही बुरे कर्म किए हुए थे ? क्या सिद्ध हुआ कि जब से यह संसार बना है यह लड़ाई झगड़े या तबाही कभी समाप्त नहीं हुई। लड़ाइएं भी होती हैं, भूचाल भी आते हैं और बाढ़ों से भी हानि होती है। मुहम्मद गौरी ने भारत पर हमले किए कितना रक्तपात हुआ। १९४७ में देश के बंटवारे के समय कितनी जानें गई। तो इससे मैं इस परिणाम पर आया कि यह इस संसार को बनाने वाले का कर्म है, जिसको सन्त काल कहते हैं।

मैं एक सत्यप्रिय व्यक्ति के नाते अपने आप से पूछता हूं कि फकीर ! तुम लोगों को तो उपदेश करते हो लेकिन क्या तुम भव सागर से बच गए ? हां ! कैसे ? मुझे यह अनुभव हो गया कि इस

त्रिगुणात्मक जगत में ऐसा होता ही रहता है और होता ही रहेगा। यहां मृत्यु के साथ जीवन, स्वास्थ्य के साथ रोग, बचपन के साथ बुढ़ापा, लाभ के साथ हानि और अमीरी के साथ गरीबी है। यह इस संसार का नियम है। वह वस्तु तो सबके अन्तर रहती है जो इस चक्र का अनुभव करती है, काल के चक्र को देखती है और इन सबकी साक्षी है जिसको सन्त सुरत कहते हैं, यदि उसको काल की रचना की ओर से हटा कर परे कर दिया जाए तो यह चक्र तो चलता ही रहेगा और जो कुछ होता है होता ही रहेगा किन्तु तुमको व्यापेगा नहीं और तुमको इसका दुख सुख महसूस नहीं होगा जैसे क्लोरोफारम देने के बाद डाक्टर आदमी के शरीर के किसी भाग को काटता है लेकिन उस समय आदमी को महसूस नहीं होता। मेरी समझ में इस काल के चक्र से बचने का कोई और उपाय नहीं हैं। सन्तों ने काल के विरुद्ध बहुत कुछ कहा लेकिन क्या काल के चक्र को रोक सके? स्वामी जी महाराज ने काल को जालम तो कह दिया किन्तु क्या काल के जुल्म को रोक सके?

इसको रोकना किसी के बस में नहीं है। क्या सन्तों के बच्चे नहीं मरे ? क्या उनके अपमान नहीं हुए ? तुम अपने कर्म को तो किसी सीमा तक ठीक कर सकोगे लेकिन ब्रह्मण्डी मन के चक्र को कोई नहीं रोक सकता। यदि सन्तों को बीमारी न आती या उनका अपमान न होता फिर तो मैं मान लेता किन्तु वह तो अपने काल के चक्र को भी न रोक सके।

हम अपनी सुरत को इस त्रिगुणात्मक जगत से हटा कर उस जगह ले जाना चाहते हैं जिस जगह हमको इस त्रिगुणात्मक जगत का भान न हो। अपनी सुरत को वहां ले जाने का जो उपाय है उसका नाम है नाम। इसलिए सन्तों के मार्ग में नाम की बहुत महिमा है। इस नाम के बिना भव सागर से बचने का और कोई उपाय नहीं है। यदि हम अपनी सुरत को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोध भान से परे ले जाए तो हम को इस त्रिगुणात्मक जगत का भान नहीं होगा। गुरु जब नाम देता है तो यही कहता है कि अपनी सुरत को तीन सुन से पार ले जाओ—

तीन सुन्न से पारा वह है देश हमारा
नाम रहे चौथे पद माहीं· यह ढूण्डे त्रिलोकी मांहीं ।

हमारा असली घर जहां से हम इस शरीर में में आए हैं वह बहुत परे है । जब तक कोई आदमी तीन सुन (शरीर, मन और आत्मा) से परे नहीं नहीं जाएगा वह इस Creator अर्थात् इस संसार के बनाने वाले के संसार के प्रभावों से बच नहीं सकता चाहे वह राजा हो, चाहे वह प्रजा हो, चाहे सन्त हो या चाहे वह परम सन्त हो । हमारा वह ईष्ट वहां है जहां जा कर हम भव सागर से बच सकते हैं । कबीर साहिब की जवानी सुनो—

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार ।
नहिं वँह काया नहि वहं माया, नहिं तंह त्रिगुन पसार ।
चार बरन उहवां हैं नाहीं, ना है कुल व्योहार

जब तक वह हंस अर्थात् विचार शक्ति जो शरीर मन और प्रकाश का अनुभव करती है और काया माया प्रकाश की रचना से परे नहीं जाएगी तब तक वह भवसागर के चक्र के प्रभावों से बच नहीं सकती ।

नौ छः चौदह विद्या नाहीं, नहिं वंह बेद विचार
जप तप संयम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार

जब तक कोई जप तप तीर्थ व्रत और धर्म कर्म के पीछे लगा हुआ है वह उस आद अवस्था में जा नहीं सकता और न ही इस परिवर्तनशील संसार के प्रभावों से बच सकता है। इसका प्रमाण ? मैंने बड़े २ नाम धारी और बड़े बड़े अभ्यासी देखे जो कि समय आने पर दुखी हुए और रोए । तो फिर हमने जाना कहां है ?

पांच तत्व नहिं उत्पति भईवै. सो परलय के पार।

प्रलय क्या है ? जहां सब वस्तु नाश हो जाती है उसका नाम प्रलय है। रचना होती है और फिर प्रलय हो जाती है। हमारे शरीर की प्रलय मौत है। जब मौत का समय आता है तो शरीर में जो चेतन शक्ति है वह हाथ और पांव की ओर से सिमटना आरम्भ करके मस्तिष्क में आ जाती है और फिर बाहिर सिकल जाती है।

तीन देव न तेंतीस कोटि, नाहिं दसो अवतार

लाख तुम अवतारों को मनाओ, उनकी पूजा करो, बाबे फकीर या किसी और गुरु के फोटो के आगे रोते रहो जब तक शरीर, मन और प्रकाश के संसार में हो तुम इसके परिवर्तन के प्रभावों से बच

नहीं सकते । लोग मुझे परम सन्त कहते है और मैं भी अपने आप को समय का सन्त सतगुरु कहता हूं लेकिन शारीरिक कष्ट के समय मैं पीड़ा को अनुभव करता हूं । कष्ट सबको होता है किन्तु अपनी दशा को कोई प्रकट नहीं करता । इसलिए सन्तों ने यह इलाज निकाला हैं कि जो संसार के दुखों से बचना चाहता है उसके लिए 'नाम' है और जो संसार में उन्नति या सुख चाहता है वह अपने कर्म और विचार को ठीक करे ताकि इस कर्म के फल से उसकी दशा अच्छी हो जाए और वह सुखी हो जाए मगर इससे वह भवसागर से पार नहीं जा सकता । जब सुरत शरीर मन और प्रकाश से हट कर उस तरफ जाए या उस अवस्था में जाए जहां त्रिगुणात्मक जगत का खेल नहीं है तब उसको भव सागर का प्रभाव नहीं सतायेगा । यह है सच्चा नाम दान किन्तु यह है बहुत कठिन और खास कर उनके लिए तो और भी कठिन है जो दो २ घण्टे समाधि लगातेहै । किसी को क्या कहूं मैंने आप बारह २ घण्टे की समाधी लगाई है मगर जो असली नाम है उसके भेद को न समझ सका । जब तक किसी को यह

विश्वास नहीं होता कि इस संसार में सुख नहीं है वह इस भेद को समझने के योग्य नहीं हो सकता। गामा पहलवान रुस्तमें हिन्द था। पिछली आयु में उसकी क्या दशा हुई ? वह जो उसका इतना बलवान शरीर था क्या वह रहा ? यहां कोई वस्तु स्थिर नहीं रहती। कबीर साहिब ने कहा है :—

का मांगौं कछु थिर न रहाई. देखत नैन चल्यो जग जाई।
इक लख पूत सवा लख नाती, जा रावन घर दिया न बाती
लंका सा कोट समुद्र सी खाई, जा रावन की खबर न पाई
सोनें के महल रुपे के छाजा, छोड़ि चले नगरी के राजा
कोई करै महल कोई करै टाटी, उड़ि जाय हंस पड़ी रहे माटी
आवत संग न जात संगाती, कहा भए दल बांधे हाथी
कहैं कबीर अन्त की बारी. हाथ झारि ज्यों चला जुआरी

इसलिए नाम उसको दिया जाता है जो त्रिगुणात्मक जगत में निकलना चाहता है। क्या नाम दिया जाता है ? कि ऐ सुरत ! तू शरीर मन और इन्द्रियों में फंस गई है इसलिए तू दुखी रहती है। तुमने अपना घर छोड़ दिया है और तू अपने आप को भूल गई है तू ईश्वर के पीछे लगी रही इसलिए तू अशान्त है अब चेतवान हो जा ओर अपने आप

को जान पहचान ।

तुम लाख ईश्वर की पूजा करो तुमको दुख सुख अवश्य आते रहेंगे तुमको मृत्यु भी आएगी और बार २ आएगी क्योंकि तुम्हारा आवागमन समाप्त नहीं होगा । तुम्हारी आंखों के सामने सब कुछ हो रहा है । इसलिए सन्त ईश्वर को मानते तो हैं किन्तु पूजते नहीं क्योंकि ईश्वर की पूजा करने से तुम भव सागर से पार नहीं जा सकते और ब्रह्म ब्रह्म करने से तुम्हारा आवागमन समाप्त नहीं होगा । स्वामी जी ने भी कहा है—

सुरत तू दुखी रहे हम जानी
जब से तुमने शब्द विसारा, मन इन्द्री संग यारी ठानी
सौलह संख के आगे होंई, समरथ का दरबार
सेत संघासन आसन बैठे जहाँ शब्द झंकार ।

सोलह संख से कबीर साहिब का क्या भाव है यह तो वही जानते होंगे । मैंने जो समझा वह बता सकता हूं । एक तो गिनती में दस संख होता है और दूसरा बह संख होता है जो कि मन्दिरों या गुरुद्वारों में बजाया जाता है उसमें एक ओर फूंक मारते हैं तो वह फूंक संख के चक्रों में से होती हुई दूसरी ओर

से निकल जाती है। ऐसे ही हमारी सुरत सारे शरीर में फैली हुई है जब तक वह शरीर मन और आत्मा के चक्रों से निकल कर ऊपर नहीं जाएगी, आवागमन या भव सागर समाप्त नहीं होगा। यदि सोलह संख लम्बाई या मीलों का हिसाब है तो कबीर साहिब को पता होगा मुझै नहीं पता। हमारी सुरत का शरीर मन और आत्मा से निकल कर सत पद में चले जाना जहां त्रिगुणात्मक जगत नहीं हैं मैं यह सोलह संख या सोलह चक्र समझता हूं।

पुरुष रूप कहा वरनूं महिमा. तिन गति अपरमपार

वह है हमारा देश। जब तक हम वहां नहीं जाएंगे हमारा भव सागर समाप्त नहीं होगा। मैं भव सासर से कैसे निकला? बस केवल इस इस एक विचार से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा रूप लोगों के अन्तर उनकी जाग्रत, स्वप्न और समाधी की अबस्था में जाता है या प्रकट होता है और उनके काम करता है किन्तु मैं नहीं होता तो मुझे यह समझ आ गई कि मेरे अंतर भी जो रंग रूप भाव विचार और संकल्प विकल्प पैदा होते हैं यह असल में है नहीं, यह मेरी काया में

में माया है। अब साधन के समय मैं इन सब को छोड़ जाता हूं। इनसे निकलना ही तो है, बजाय मेहनत के ज्ञान से निकल जाता हूं। इसी अनुभव के आधार पर सन्तमत में स्वामी जी महाराज ने खट चक्रों का साधन बन्द कर दिया। रूह को इन चक्रों से निकाल कर मस्तिष्क में लाना ही खट चक्र हैं न। अब मैं कहता हूं कि मन के चक्रों का साधन करने की भी कोई आवश्यकता नही है। अब नीचे के चक्रों को छोड़ कर हम मस्तिष्क में आ सकते हैं तो मन के चक्रों को छोड़ कर भी सीधे आध्यात्मिक चक्रों को क्यों न पकड़ें। स्वामी जो महाराज ने नीचे के चक्रों का साधन वन्द कर दिया और प्राणायाम भी बन्द कर दिया। अब मैं यह कहता हूं कि बजाय इसके कि हम आयु का बहुत सा भाग मन के चक्रों में गुजारें क्यों न हम सीधे ही शब्द को पकड़ें यह मेरा अनुभव है। मैं एक बार गोरख पुर में गया और वहां मैंने सत्संग में यही बात कही थी तो श्री काशी नाथ मुखतार जो कि हजूर दाता दयाल जी महाराज के सत्संगी हैं, ने मुझे बताया कि एक बार हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि

भविष्य में आने वाले संत भंवर गुफा से साधन आरम्भ करेंगे। इससे मेरे अनुभव की पुष्टि हो गई।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर यह बात कही है कि निचले दरजों में साधन करने की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु यह केवल उनके लिए है जो भवसागर से पार जाना चाहते हैं और जो आदमी सांसारिक वस्तुओं की इच्छा रखते हैं, शारीरिक और मानसिक आनन्द चाहते हैं उनके लिए छठ चक्रों का साधन आवश्यक है किन्तु जब तक मन के चक्रों में रहोगे तुमको दुख और सुख अनुभव होता रहेगा और भव सागर से पार नहीं जा सकोगे।

मैंने अपने आप को समय का सन्त सतगुरु कहा है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना इसलिए अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं कि जो जीव भव सागर से पार जाना चाहते हैं वह आरम्भ से ही शब्द का अभ्यास शुरू करें मगर कर वह सकेगा जिसको वैराग्य होगा, जिसको यह विश्वास हो चुका है कि इस संसार में सुख नहीं है,

यहां न राज़ा सुखी है और न रंक सुखी है। कबीर साहिब ने कहा है—

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
उदय अस्त की बात कहत हैं, सबका किया विवेका हो।।
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया, क्या गिरही वैरागी हो।
सुखदेव अचारज दुख के डर से, गर्भ से माया त्यागी हो।।
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना हो।
आसा तृस्ना सबको व्यापै, कोई महल न सूना हो।।
सांच कहौं तो कोई न मानै, झूठ कहा न जाई हो।
ब्रह्मा विस्नु महेस्वर दुखिया. जिन यह राह चलाई हो।
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दूखी बिपरीती हो।
कहै कबीर सकल जग दुखिया, सन्त सुखी मन जीती हो।।

जो मन के चक्रों में या छट चक्रों में साधन करता है वह योगी है वह भी दुखों से बच नहीं सकता। क्योंकि मेरे जिम्मे शिक्षा को बदल देने का कर्तव्य है इसलिए मैं यह ऊंचा सत्संग दे रहा हूं कि जिनको आगे जाने की आवश्यकता है वह सीधे ही शब्द को पकड़ें मगर मेरे पास भव सागर से पार होने के लिए कौन आता है ? जो भी आता है वह किसी न किसी सांसारिक स्वार्थ के लिए आता है। कबीर साहिब ने कहा है—

ऐसी दीवानी दुनियां, भक्तिभाव नहिं बूझे जी।
कोई आवे तो बेटा मांगै, यही गुसाईं दीजै जी।
कोई आवे दुख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी।
कोई आवै तो दौलत मांगै, भेंट रुपया लीजै जी।
कोई करावै व्याह सगाई, सुनत गुसाईं रीझे जी।
सांचे का कोई गाहक नाहीं, झूठै जगत पतीजा जी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अन्धों को क्या कीजै जी।।

इसलिए जो लोग भवसागर से पार ज़ाना चाहते हैं उनके लिए यदि कोई मार्ग है तो शब्द योग या दूसरे शब्दों में नाम है। क्योंकि जीव सांसारिक इच्छाओं में फंसे हुए हैं इसलिए उनके लिए पांच नाम का साधन हैं ताकि वह संसार में सुखी भी रह सकें और थोड़ा २ साधन भी करते रहें यदि उनके भाग में होगा तो वह आगे भी चले जाएंगे।

बन्दनम सत ज्ञान दाता, बन्दनम सतज्ञान मय।
बन्दनम निर्वाण राता, बन्दनम निर्वाण मय।

यह बाहर के गुरु की बन्दना की गई है जो रहस्य ज्ञाता होता है और तुमको ज्ञान देता है। सुनो ! ईश्वर आकर तुमको ज्ञान नहीं देगा, ज्ञान तुमको कोई पूर्ण पुरुष देगा। क्योंकि मैं समय का सन्त सतगुरु हूं इसलिए अपने कर्तव्य को पूरा कर

जाना चाहता हूं कि ऐ मानव ! यह संसार परिवर्तन-शील है शरीर में रहते हुए अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखो। यदि मानसिक आनन्द चाहते हो तो सहस दल कमल में अभ्यास करो तुमको ऋद्धि सिद्धि मिल जाएगी, त्रिकुटि में अभ्यास करने से तुमको ज्ञान और अनुभव हो जाएगा. सुन्न में मानसिक आनन्द मिलेगा, महासुन्न में निर्विकल्प समाधी लग जाएगी भंवर गुफा में तुम्हारा अपना ही स्वरूप है। यदि पार जाना चाहते हो तो शब्द को पकड़ो। प्रकाश का साधक सदा के लिए आवा-गमन से निकल नहीं सकता। हां ! कुछ समय के लिए मुक्ति मिल जाएगी। क्योंकि प्रकाश रचना करता है इसलिए फिर कभी रचना होगी तो यही प्रकाश फिर वापस आ जाएगा जैसे जब कृष्ण जी का अवतार हुआ तो देवी और देवते मृत्यु लोक में आकर गोपियां और गोप बने। क्योंकि वह प्रकाश में रहते थे इसलिए जब विष्णु अर्थात् प्रकाश को आवश्यकता पड़ी तो उनको यहां भेज दिया इसलिए आवागमन को सदा के लिए समाप्त करने के वास्ते शब्द योग है।

भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिन्ध सदगति, जीव जन्तु मीन सब ।

गुरु कौन है ? गुरु वह सुरत है जो शरीर मन प्रकाश और शब्द से परे की वासी है, वह शरीर में आकर जीव को उसी प्रकार की शिक्षा देता है जिस प्रकार के सुख की उस जीव को आवश्यकता होती है इसलिए ईश्वर परमेश्वर से बढ़कर बाहर के पूर्ण गुरु की महिमा है क्योंकि वह रहस्य ज्ञाता होता है इसलिए वह राय देता है जिससे जीव यहां भी सुखी रह सके, मानसिक और आत्मिक आनन्द भी ले सके और आगे भी पहुंच जाए। संसार में सुखी रहने के लिए पांच नाम हैं और संसार से पार जाने के लिए निज नाम है।

आप गुरु सतगुरु दया और प्रेम के भण्डार हैं।
आप करता धरता हैं करतार जगदाधार हैं।

सन्त के अंतर प्रेम होता है और वह संसार में आकरजीवों को भेद देता है।

ऋद्धि सिद्धि शक्ति नवनिधि, हैं चरन में आपके।
बच गया भव दुख से, जो आया शरण में आपके।

आप लोग आए हैं मैं अपनी जिम्मेदारी को

महसूस करता हूं और जो कुछ मैंने समझा है वह आप को बताना अपना कर्तव्य समझता हूं । मैंने साधारण तौर पर संसार का नक्शा खेंच कर आपको बता दिया । जब तक शरीर में रहते हो, जहां तक हो सके अपने ध्यान को इन अवस्थाओं में या केन्द्रों में ठहराने का यत्न किया करो और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। मन में रहते हो तो गुरु स्वरूप का ध्यान किया करो । अपने विचार शुद्ध रखो और किसी के साथ धोखा फरेब हेरा फेरी मत करो। यदि आत्मानन्द चाहते हो तो प्रकाश में जाओ और यदि सदा के लिए इस चक्र से निकलना चाहते हो तो शब्द को पकड़ो। भवसागर से बचाने वाला निज नाम है और वह चौथे पद में रहता हैं । मन में रहते हुए तुम लाखओं की धुन सुनते रहो या सारंग या रारंग सुनते रहो, तुम मैं सिद्धि शक्ति तो आ जाएगी मगर भवसागर से पार नहीं जा सकोगे। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तुम भवसागर से पार हो गए ? मुझे मार्ग मिल गया और उपाय मिल गया । मैं उस नाम में ठहरने का यत्न करता रहता हूं मगर अभी तक स्थाई रूप से

वहां ठहरा नहीं जाता इसलिए मैं यह नहीं कह सकता कि मेरा परिणाम क्या होगा।

इस संसार में दुख और सुख अपने कर्मानुसार सबको भोगने पड़ते हैं। ज्ञानी को क्योंकि यह ज्ञान हो जाता है कि शरीर में कष्ट होने से दुख तो होगा ही और मानसिक कष्ट होने से अशान्ति का आना आवश्यक है इसलिए वह दुख सुख आनन्द और आनन्द रहित दशा को भोगता हुआ इनकी चिन्ता नहीं करता क्योंकि उसको ज्ञान हो चुका है कि यह तो शरीर और मन का भोग है। स्वामी जी महाराज ने एक शब्द में कहा है—

सुरत तू दुखी रहे हम जानी।
जा दिन से तुम शब्द विसारा, मन संग यारी ठानी।

में मन से ही तो दाता दयाल जी महाराज का रूप बनाता था इसलिए ध्यानी भी दुख से बच नहीं सकते क्योंकि वह मन से ही तो ध्यान करते हैं। आज तक यह भेद जो मैंने सर्व साधारण में खोल दिया है किसी ने नहीं बताया यदि किसी खास चेले को किसी सन्त ने बताया भी तो फिर उनको गुप्त रखने की हिदायत कर दी। क्यों ? क्योंकि

संसार को इसकी आवश्यकता नहीं संसार तो संसार चाहता है। जब तक कोई आदमी मन के संकल्पों में बन्धा हुआ है वह दुख और सुख से बच नहीं सकता।

मन मूर्ख तन साथ बंधानि, इन्द्री साथ लभानी।

तुम लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और तुम खुश होते हो। आ के मुझै मत्थे टेकते हो और रुपए देते हो लेकिन मैं तो कहीं जाता नहीं। वह स्त्री आई और कहा कि बाबा जी हमारे मकान को आग लग गई और मैंने आप को याद किया आपने आकर मेरी पीठ पर हाथ रख दिया और कहा कि मत घबराओ तुम्हारी कोई हानि नहीं होगी फिर उसने मुझे पानी की बाल्टी आग पर डालते हुए देखा और आग बुझ गई और नुकसान से बच गए। क्या मैं गया था ? बिलकुल नहीं। वह तुम लोगों का अपना ही विश्वास और तुम्हारा अपना ही मन है इस का समझना महान कठिन है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्दलिखा है

यह मन समझन जोग, साधो यह मन समझन जोग।
मन ही ज्ञान मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग।

मन में वेद को पढ़ते, ब्रह्म शंकर करते योग।
मन ही अन्तर सृष्टि व्यापी ।. मन ही में है रोग।
मन गोविन्द मन गोरख रूपा मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग।
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्योहार जगत में, नाहीं जाने लोग।

मन में प्रवल शक्ति है तुम्हारे अन्तर में जो रूप प्रकट होता है वह भी सब तुम्हारे ही मन का खेल है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मैं अच्छी प्रकार जानता हूं कि यह मेरा स्पष्ट वर्णन मन्दिर की ज ों पर कुल्हाड़ी का काम करता है. मेरे स्पष्ट वर्णन से मन्दिर में कौन पैसा देगा ? संसार तो बहां धन देता है बल्कि लुटता है जहां सब्ज वाग दिखाया जाता है मगर मैं हूं समय का सन्त सतगुरु। पैसा इकठ्ठा करने नहीं आया हूं मैं संसार में सच्चाई वर्णन करने आया हूं इसलिए मुझसे झूठ नहीं बोला जाता। यह लेना देना तो संसार का व्यवहार है और यह सब पिछले कर्मों के अनुसार है।

कुल परिवार सभी दुखदाई, इन संग रहित भुलानी।

हमारा परिवार क्या है ? माता पिता भाई बहिन स्त्री और बच्चे ही परिवार नहीं हैं जिसने

इनकी त्यागा उसने परिवार को नहीं त्यागा । हमारा परिवार है हमारी पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञान इन्द्रियां जिनमें हमारी सुरत फंसो रहती है और हमारी यह दशा होती है । बाहर के परिवार को त्याग कर तो लोग साधु बन जाते हैं और वनों में चले जाते हैं लेकिन वहां क्या वह सुखी हैं ? नहीं । सुखी वह हो सकता है जो अपने के अन्तर परिवार को त्याग देता है ।

तू चेतन्य यह जड़ सब मिथ्या क्यों कर मेल मलानी ।
ताते चेत चलो यह अवसर, नहीं भरमो तुम खानी ।

असल वस्तु तो वह है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है वही मन के विचारो की साक्षी है हमने असत को सत माना हुआ है इसलिए हम दुखी भी होते हैं और सुखी भी होते हैं । इसलिए मैं कहता हूं कि जो सदा के लिए इन दुखों और सुखों से बचना चाहते हैं वह भेद को समझें; तुमको नर शरीर मिला है समय का लाभ उठाओ अन्यथा मरते समय जो रूप तुम्हारे सामने आएगा इसके अनुसार तुमको दूसरा जन्म अवश्य लेना पड़ेगा ।

सतसंग करो सतपद खोजो, सतगुरु परीत समानी ।
नाम रतन गुरु देवें बुझाई, उलट चढ़ो असमानी ।

किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग करो उसकी वाणी को सुनो, गुणो और उस पर अमल करो । यहां लिखा कि गुरु नाम बुझा देगा, यह नहीं लिखा है कि गुरु नाम देगा । नाम दिया नहीं जाता बल्कि नाम लिया जाता हैं । नाम के लिए मेरे पास कौन आता है संसार तो संसार के लिए आता है । एक प्रकार से तो वह भी उनको मिल जाता है । कैसे ? लोगों को मिलता तो उनके अपने कर्म का फल है मगर नाम हिज हौलीवेस बाबे फकीर का हो जाता है ।

इतना काम करो तुम अब के, फिर आगे की सतगुरु जानी
राधास्वामी कहत सम्हारो दुख छूटे मिलि निशानी

तुम सत्संग से बात को समझो बाकी काम फिर अपने आप हो जाएंगे । क्योंकि मैं सत्यप्रिय व्यक्ति हुं और मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा। वह संसार को बता जाऊंगा इसलिए अपने कर्म भोग बस यह बता दिया कि मैं इस भवसागर से कैसे बचा और मैं सन्तमत को क्यों सच्चा मानता हूं । हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि

फकीर ! मेरी आज्ञा मानो तुमको सच्चे सतगुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे, वह अब हो गए इसलिए मैं आप सत्संगियों को सच्चा सतगुरु मान कर नमस्कार करता हूं।

सबको राधास्वामी ।

प्रिंसिपल रलाराम जी को श्रद्धांजली

पण्डित रला राम जी (भूतपूर्व प्रिंसिपल डी. ए. बी. कालेज होशियारपुर) लगभग नौ दिन हस्पतांल में रहे और चोला छोड़ गए। कल उनकी कर्म क्रिया थी। मेरी उनके साथ जान पहचान तो काफी समय से थी मगर पांच छः साल से मेरा उनके साथ प्रेम बढ़ गया था और मैं बड़ी श्रद्धा और प्रेम से उनका मान सम्मान किया करता था। कल उनकी कर्म क्रिया के समय अपनी श्रद्धा से अपने विचार प्रकट करने का अवमर मिला।

प्रिंसिपल रलाराम जी को मैं सतगुरु का रूप मानता था। सत्गुरु कहते हैं सच्चे ज्ञान को। मैं ब्राह्मण हूं। तलाश के सिलसिले में मैं १९०५ में हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों मैं गया था। वहां से मुझे सन्तमत

राधास्वामी मत, नानक मत या कबीर मत की शिक्षा मिली थी । वर्णनशैली में कुछ अन्तर होने के कारण कई बार मेरे मन में यह विचार आता था कि मैं ब्राह्मण बंश में पैदा हुआ हूं जो कि वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों को मानते हैं, मैंने सन्तमत में जो कुछ अनुभव किया है कहीं यह गलत न हो । पण्डित रलाराम जी को मैं मानवता मन्दिर होशियारपुर में वैसाखो के सत्संग पर और देहलो में दशहरे के सत्संग पर हर वर्ष बुलाया करता था और सत्संगों मैं अपना अनुभव ब्यान किया करता था । मैं पण्डित रलाराम जी और श्री वसिष्ठ जी को यह कहा करता था कि अगर आपकी सनातन शिक्षा के अनुसार मेंरा अनुभव नहीं है और अगर मैं गलत हूं तो आप निर्भय हो कर बिना पक्षपात मेरा खण्डन कर दें क्योंकि आप आर्य समाप और सनातन धर्म के नेता हैं ।

मैं ऐसा क्यों कहता था ? मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं । मैंने जिन्दगी सच्चाई की खोज में गुजारी है मगर मैं यह दावा हरगिज नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है यही ठीक है मेरे विचारों को

सुन कर पण्डित रलाराम जी वेदो, शास्त्रों, उपनिषदों और गोता के श्लोकों को पढ़ कर उनका अर्थ किया करते थे और मुझे कहा करते थे कि आप जो कुछ कहते हैं यह बिल्कुल ठीक हैं। क्योंकि उनके यह प्रमाण देन से मुझे शान्ति और खुशो मिलती थी और मेरी यह शंका और भ्रम कि मैं गलती पर न हूं यह दूर हुये। इसलिए मैं उनको गुरु रूप समझ कर उन की मान प्रतिष्ठा किया करता था। गुरु नाम है सच्ची समझ, सच्चे विबेक और सच्चे ज्ञान का। इससिए इस भाब को लेकर इस अवसर पर मैंने कहा था कि ऐ पण्डित रलाराम जी की आत्मा! यदि तू यहां कहीं है तो सुन ले कि यह सब संसार जब किसी की प्रशंसा कहता है तो अपने स्बार्थ और हित के ध्यान से करता है। क्योंकि वहां पण्डित रलाराम जो को श्रद्धांजलि भेंट करने वाले उनकी सराहना कर रहे थे इसलिए मेरे दिल में यह ख्याल आया कि अगर उन की आत्मा यहां कहीं हो तो वह इस प्रशंसा को सुन कर कहीं संसार के चक्र में न आ जाये। हिन्दू कौम में या दूसरे धर्मों में या सन्तमत में यह माना जाता है कि जीव आत्मा

शरीर को छोड़ने के बाद सूक्ष्म रूप में भ्रमण करता है और फिर कुछ समय के बाद अपने कर्मानुसार उस को दूसरा चोला मिलता है। इस ख्याल से मैंने निर्भय होकर यह कहा था और अब भी कहता हूं कि ऐ पण्डित रलाराम जी को आत्मा। तू इस संसार की इज्जत मान और प्रशंसा के चक्कर में मत आना। इस दुनियां का एक अजीब ही खेल है। यह बदलती रहती है। आज एक आदमी की दुनियां प्रशंसा करती है कल उसी को बुरा भला कहने लग जाते है। यह दुनियां ही ऐसी है। ऋषियों या सन्तों के मार्ग में हर्ष और शोकरहित होने की शिक्षा दी जाती हर्ष कब होता है? जब कोई दूसरा आदमी उसको प्रशंसा करता है और शोक कब होता है? जब कोई दूसरा आदमी उसकी बुराई करता हैं। इस बासते उनकी क्रिया के समय पर मैंने यह शब्द कहे थे। सम्भव मेरे शब्दों को सुन कर उनके सम्बन्धी या मित्र जनों ने बुरा भी माना हो। मगर मैंने बुराई के ख्याल से नहीं कहा मैंने एक सच्चा हितैषी होने के नाते उनकी आत्मा को इस संसार के मान अपमान के चक्करसे निकलने के

लिए बड़ी श्रद्धा, हित, प्रेम और सच्चाई से उनकी आत्मा को चेतावनी दी थी कि इन दुनियां वालों की प्रसन्नता देने वाली बातें सुनकर न चे की ओर ध्यान न देना बल्कि परब्रह्म ओर शब्दब्रह्म की ओर सुरत लगाना। प्रकृति ने मुझको जीवों के कल्याण और उनको भवसागर से पार करने में मदद करने का काम सौपा है। क्योंकि पण्डित रलाराम मेरे मित्र थे और मैं उन को गुरु स्वरूप मानता था इसलिए अपनी श्रद्धानुसार मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया।

मेरे दिल में यह ख्याल आता है कि श्रद्धांजलि लिखने से तेरा क्या मतलब है? सोचता हूं कि क्या इस से तेरा उद्देश्य तेरो बढ़ाई है? नहीं। जिस जीव ने तरना है या कुछ बनना है या इस चक्कर से निकलना है उसने अपने ही कर्म, अपने ही ख्याल और अपने बिश्वास से निकलना है। किसी हितैषी ने या बाहर के गुरु ने जीव को सच्चाई ब्यान करके उस के ख्याल को इस संसार से परे करने की राय देनी है क्योंकि मेरे जिम्मे यह डयूटी है और फर्ज है कि जींव को भवसागर से पार होने में उसको

सहायता करूं या सुखी रहने के लिए उसको सही राय दूं इसलिए यह लिख रहा हूं कि अगर कोई इस संसार के चक्कर से निकलना चाहता है तो स्तुति और निन्दा जो इस संसार में होती रहती है इससे अपनी सुरत को हटा ले। जब तक वह ऐसा नहीं करता वह लाख साधक या सरत शब्द योग का अभ्यासी हो वह इस चच्कर से निकल नहीं सकता। साधन और अभ्यास के लिए अगर कोई कामिल गुरु मिला हुआ नहीं है तो यह साधन अभ्यास आदमी को अहंभाव में फंसा देता है। केवल यह बात बताने के लिए यह श्रद्धांजलि पब्लिक में पेश कर रहा हूं।

(sd) Faqir
Manavata Mandir, Hoshiarpur
Dt. 1. 2. 75

मनुष्य बनो

प्यारे सज्जनों !

मनुष्य बनो का नारा पहली बार हजूर परम संत परम दयाल पं. फकीर चन्द जो महाराज ने सन १९४७ ईसवी में लगाया था. जब कि मनुष्यत्व को भूलकर साम्प्रदायिक भावनाधीन भारतवर्ष का विभाजन और भयंकर रक्तपाय हुआ। क्योंकि सन्त सँसार में दुखी जीवों के दुख दूर करने के लिए आते हैं. इन अशिष्ट घटनाओं को देखकर परम दयाल जी महाराज के मन में दया उठी और समय की आवश्यकता के अनुरूप मनुष्य बनो की धोषणा की।

आज मानवता संसार भर में समय की माँग बन रही है, मानवता का प्रचार और प्रसार हो रहा है। अब तो हमारी सरकांर भी इसकी आवश्यकता अनुभव कर रही है। दिसम्बर १९७४ में हमारे देश के राष्ट्रपति श्री फ़खरुद्धीन अली अहमद और प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने रेडियो पर धार्मिक संस्थाओं से अपील की थी कि यह संस्थाएं मानवता और अहिंसा का प्रचार करें। इस अपील कों ध्यान में रखते हुए. परम संत परम दयाल पं. फकीर चन्द ली महाराज ने "मानवता नामी पुस्तक लिखी जो कि साप्ताहिक "जनता जनार्दन" होशियारपुर में प्रकाशित हो रही है।

इसके अतिरिक्त दिनांक १४-१५ अप्रैल १९७५ को बैशाखी के शुभ अवसर पर मानवता मन्दिर होशियारपुर में तेरहवां वार्षिक सतसंग हो रहा है, जिसमें परम दयाल

जी महाराज मानवता की, अपनी ८८ वर्षीय के अनुभव के आधार पर विस्तारपूर्वक व्याख्या करेंगे। अन्य धार्मिक नेता जिनको निमन्त्रित किया गया है। इस विषय पर अपने विचार प्रकट करेंगे।

नोट—सतसंग में भाग लेने वाले बाहर से आए हुए सज्जनों के निवास स्थान ओर भोजन का प्रबन्ध फकीर लायब्रेरो चैरिटेबलट्रस्ट यथाशक्ति करेगा।

बाहर से आने वाले सज्जन अपना विस्तर साथ लाएं।

यह कोई मेला या प्रदर्शन नहीं है, केवल अधिकारी पुरुष पधारें।

निवेदक—मन्त्री मानवता मन्दिर
सुतेहरी रोड, होशियारपुर

मेरे पास लोग नाम दान लेने अभ्यास की विधि सीखने के लिए कई आते हैं। गुरु बन कर किसी को ऐसी शिक्षा देना अपने सिर पर बोझ लेना है क्योंकि गुरु नम तो समझ, विवेक, या ज्ञान का है, या आदमी के अंतर प्रकाश गुरु के चरण हैं, व शब्द गुरु की देह है।

मेरे पास महात्मा दयाल दास जी रहते हैं। अभ्यासी हैं, और लुत्फ ये है कि वो ये समझते हैं कि मैं उनका गुरु हूं और उनके साधन में जो तरक्की हुई, वह मैंने की है। मैं कहता हूं कि मैंने कुछ नहीं किया। यह उसकी श्रद्धा विश्वास, पिछले कर्म या मालिक ने जो बख्शा है उसे मिला है। अगर कोई शख्श साधन की विधि या उन्नति चाहता हो, यहां मानवता मन्दिर में उनसे मिले और तरीका साधन वगैरा सीख सकता है :

मैं किसी बात की कोई गारन्टी नहीं देता, मेंरे अनुभव में आया है, जो कुछ किसी को मिलता है, मिल चुका है या मिलेगा वो उसके पूर्व कर्म, नियत या श्रद्धा का फल है। वह भी उस मालिक की दया पर है। जिस पर दया आदि कर्ता की हो वो ये न्यामत पावै। फकीर

सूचना

अनुभव सार नामी पुस्तक जो कि श्री कुवेर नाथ श्री वास्तद ऐडवोकेट, रसड़ा ने लिखी है और मानवता मन्दिर की तरफ से प्रकाशित हुई है, बिना मूल्य सैक्रेटरी 'मानबता मन्दिर' से मिल सकती है। पुस्तक पढ़ने के बाद यदि कोई सज्जन चाहे, तो मानवता मन्दिर की अपनी इच्छानुसार दान के रूप में सहायता कर सकता है। यदि पुस्तक पसन्द न आए तो पढ़ने के बाद मन्दिर को लौटाई भी जा सकती है।

सैक्रेटरी,
मानवता मन्दिर,
होशियारपुर।

सूचना

अप्रेल १९७५ में मानव मन्दिर प्रकाशित नहीं होगा, इस के स्थान पर साप्ताहिक जनता जनार्दन होशियारपुर का मानवता विशेषाङ्क, सब की सेवा में भेजा जायगा इस अंक में हज़ूर हरम दयाल जी महाराज की लिखी हुई मानवता नामी पुस्तक छपेगी।

सम्पादक
मानव मन्दिर

सूचना

माह मार्च १९७५ का मासिक सत्संग मानवता मन्दिर होशियारपुर में १६-३-७५ को होगा. यह सत्संग हजूर पीरेगुगां साहिब करायेंगे। उन की अनुपस्थिति में सत्संग महात्मा दयाल दास जी करायेंगे।

मन्त्री

मानवता मन्दिर

सूचना

मानव मन्दिर का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। क्यों? मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। मैंने जो कुछ समझा और अनुभव किया वह किसी धर्म या पन्थ के धर्मग्रंथों से नहीं लिया। यह मेरा निज अनुभव है। क्योंकि निज अनुभव का नाम ही ज्ञान है, मैं अपने ज्ञान को बेचता नहीं। तुलसीदास जी ने रामायण में भरत की जबानी यह ख्याल जाहिर किया है कि ब्राह्मण के लिए वेद का बेचना महापाप है। वेद नाम है ज्ञान का। इस पत्रिका के पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं यह हाथ जोड़ कर पढ़ने वालों से प्रार्थना करूंगा कि अगर किसी को इसके पढ़ने में रुचि न हो और जीवन को नियम-बद्ध बनाने की जरूरत न हो या इन मेरे विचारों से किसी को सन्तुष्टि, उत्साह, खुशी और शान्ति न मिलती हो तो वह मानव मन्दिर को न मंगवाए और जो मंगवा रहे हैं अगर लिख दें तो हम न भेजें। अगर कोई यह समझता है कि मेरे इस काम से किसी को फायदा पहुंचता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करे ताकि यह काम जारी रखा जाय।

पत्र व्यवहार में मानव मन्दिर का क्रमाँक नं० जरूर दिया करें।

फकीर

Regd. No. 26265/74.
MANAV MANDIR

ADDRESS

To

1283

Sh: A. Hanmanth Rao
H. No:– 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hydrabad-28
A P
500028.

From :

MANAVTA MANDIR,
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.